तृतीय अध्याय

'शिवा-बावनी' में अभिव्यक्त शिवाजी का चरित्र

अ - सच्चरित्रता

आ - उदारता

इ - वीरता

ई - लोक-संग्राहकता

उ - राष्ट्रीयता

तृतीय अध्याय

`शिवा-बावनी ` में अभिव्यक्त शिवाजी का चरित्र ---

यही अध्याय मेरे लघु-शोध प्रबंध का हृदयस्थल है। महाकवि भूषण ने अनेक वीरों की वीरता का चित्रण अपने काव्य में किया है। उनकी कविता के नायक हिंदू हैं। जो वीर हिंदुओं के पक्ष में लड़ता था, उसी का कवि भूषण ने वर्णन किया है। भूषण ने छ.शिवाजी, छत्रसाल,रावबुध्द, अवधूतसिंह, संभाजी और साहूजी आदि राजाओं का वर्णन किया है। इन सब में प्रमुख नायक छ.शिवाजी हैं। हिंदू जाति के नायक तथा `हिंदवी स्वराज्य ` की सर्वप्रथम कल्पना के जनक शिवाजी के उन्नत चरित्र को देखकर कवि भूषण के चित्त में उसको भिन्न-भिन्न अलंकारों से भूषित कर वर्णन करने की इच्छा उत्पन्न हुई। इसी कारण `शिवा-बावनी ` इस ग्रंथ की रचना हुई।

जब कवि भूषण रायगढ में छद्मवेशी शिवाजी से पहली बार मिले थे, उस वक्त उन्होंने शिवाजी को भिन्न-भिन्न ५२ छंद सुनाये थे। यही छंद `शिवा बावनी ` इस ग्रंथ में संगृहीत किये गये हैं। तेजस्वी शिवाजी को देखकर कवि भूषण ने स्वयं लिखा है कि ---

` सिव चरित्र लखि यों भयो कवि भूषण के चित्त।
भाँति - भाँति भूषननि सों भूषित करों कबित्त ।। `

` शिवा-बावनी ` में शिवाजी विषयक व्यापक सामान्य गुणों का वर्णन किया गया है। इसमें बहुत सी ऐसी घटनाओं का संक्षेप में वर्णन किया गया है कि, जिनका विस्तार के साथ वर्णन किया जा सकता है। `शिवा-बावनी` में कवि भूषण ने छ.शिवाजी के चरित्र की भिन्न-भिन्न घटनाओं ,उनके यश और उनकी महत्ता का ओजस्वी छंदों में वर्णन किया है। भूषण के शिवाजी विषयक

इस वर्णन में आस्था और श्रध्दा भाव है। इस शिवा-बावनी के नायक छ.शिवाजी महाराज के चरित्र को अगर विविध विभागों में विभाजित किया जाय तो अध्ययन की सुविधा हो सकती है। इसलिए निम्नांकित विभाग किये जा सकते हैं। ---

अ - सच्चरित्रता

आ - उदारता

इ - वीरता

ई - लोकसंग्राहकता

उ - राष्ट्रीयता

(अ) सच्चरित्रता --

जिस वीर पुरुष के पास ऐसे अच्छे गुण होते हैं कि जिससे उसके चारित्र्य में चार चाँद लग जाते हैं, परंतु जिसमें एक भी अवगुण नहीं होता कि जिससे उसके चारित्र्य में धब्बा लग जाय, ऐसा वीर पुरुष चारित्र्यवान होता है। अगर एकाध वीर पुरुष के पास सच्चरित्रता यह गुण नहीं है, और बाकी सब गुण अच्छे हैं,तो वह वीर पुरुष चारित्र्यवान नहीं बन सकता। सच्चरित्रता यह एक ऐसा गुण है कि जिससे आदमी का चरित्र उज्ज्वल बनता है। इस गुण के कारण वीर पुरुष विजय के चरम उत्कर्ष तक पहुँच सकता है, इसलिए सच्चरित्रता यह गुण अत्यंत महत्वपूर्ण गुण है।

अवगुणों से रहित ऐसे गुणी और सच्चरित्र वीर पुरुषों के ही चरित्र लिखे जाते हैं। इस आधार पर निश्चित रुप से कहा जा सकता है कि महाराज शिवाजी भी एक सच्चरित्र वीर पुरुष थे, इसलिए कवि भूषण ने छ.शिवाजी की सच्चरित्रता का वर्णन ' शिवा-बावनी ' इस ग्रंथ में अनेक छंदों में किया है। कवि भूषण छ.शिवाजी महाराज के दरबार में ' कवि-कुल-सचिव ' पद पर थे। इसलिए उन्होंने शिवाजी के चरित्र को बहुत ही नजदीक से परख लिया था।

छ.शिवाजी के साथ दिन-रात होने के कारण उन्होंने शिवाजी के चरित्र का वर्णन यथार्थ रुप में किया है।

कल्याण की लूट करने के लिए आबाजी सोनदेव गये थे। लूट में वे हिरे, जवाहरात आदि धन ले आये थे, और साथ में कल्याण के सूबेदार अहमद की पुत्र-वधु को भी लेकर आये थे। जो लूट धन के रुप में वे लाये थे, वह उन्होंने शिवाजी महाराज को अर्पण की। अंत में उन्होंने कल्याण के सूबेदार अहमद की पुत्र-वधु को भी छ.शिवाजी को भेट करने की इच्छा प्रकट की। उस वक्त शिवाजी महाराज क्रोध से लाल हो गये, क्योंकि वे पर स्त्री को माता के समान मानते थे। वे चरित्रवान थे। वे अपने चारित्र्य को भ्रष्ट करना नहीं चाहते थे, लेकिन आबाजी सोनदेव उनका चारित्र्य भ्रष्ट करना चाहते थे, इसलिए वे क्रोध से लाल हो गए थे।

कल्याण के सूबेदार अहमद की सुंदर पुत्रवधु को देखकर शिवाजी महाराज बोल उठे कि अगर मेरी माँ इतनी सुंदर होती तो मैं भी इतना सुंदर होता। जिस आबाजी सोनदेव के हाथों ने इस स्त्री को पकड लिया था, उस आबाजी सोनदेव के हाथ छ.शिवाजी महाराज ने कॉट दिये। अंत में उस स्त्री को छ.शिवाजी महाराज ने साडी-चोली पहनाकर बडे सम्मान के साथ पालकी में वापस भेज दिया। इससे छ. शिवाजी महाराज की सच्चरित्रता स्पष्ट हो जाती है। वे सच्चे चरित्रवान वीर पुरुष थे, इसी कारण वे महान बन गये।

छ.शिवाजी महाराज की नीति सब धर्मों के प्रति सहिष्णुता की थी। वे सब धर्मों को समान प्रतिष्ठा से देखते थे। औरंगजेब धर्मांध था। वह अपने इस्लाम धर्म का प्रसार करते वक्त हिंदुओं के तीर्थस्थानों को और मंदिरों को ढहाता था (पद क्र.१९)[१] और हिंदु देवी-देवताओं की मूर्तियाँ तुडवाता था। औरंगजेब जब काशीश्वर विश्वनाथ का मंदिर ढहा रहा था, तब छ.शिवाजी महाराज रायगढ में एक मसजिद का जीर्णोध्दार कर रहे थे। इससे यह स्पष्ट होता है कि शिवाजी महाराज सब धर्मों को समानता की दृष्टि से देखते थे। किसी अन्य धर्मीय व्यक्ति को छ.शिवाजी नहीं मारते थे। इसलिए शिवाजी के कट्टर विरोधी खफी-खाँ ने भी शिवाजी की धार्मिक उदारता की तारीफ की है।

छ.शिवाजी महाराज के समय सूरत शहर धनसंपन्न एवं व्यापारी दृष्टि से महत्वपूर्ण था । इस सूरत को छ.शिवाजी ने दो बार लूटा था । (पद क्र.२५)[२] लूट में जो धन मिला था, उसका उपयोग हिंदु-राज्य-विस्तार के लिए किया था । और जो शेष धन था, वह गरीब लोगों में बाँट दिया था । महाराज शिवाजी में अपनी जनता के प्रति सहानुभूति और आदर की भावना थी, इसलिए उन्होंने लूट में मिली हुई संपत्ति गरिबों को दान दी थी । ऐसे उदार और दानी राजा होते हुए भी आजकल के कई बडे राजनीतिज्ञ लोग शिवाजी को चोर,लूटेरा कहते हैं । छ.शिवाजी ने शत्रु-प्रदेशों की लूट अवश्य की है, लेकिन उन नेताओं के ध्यान में यह नहीं आता कि शिवाजी स्वयं उनके स्वार्थ के लिए लूट नहीं करते थे । लूट में पायी हुई संपत्ति गरिबों को दान देते थे । लूट के पीछे छ.शिवाजी की निजी स्वार्थ की भावना नहीं थी ।अपनी जनता की खुशहाली और राज्य-विस्तार की इच्छा से वे लूट करते थे । इससे छ.शिवाजी की उज्ज्वल कीर्ति स्पष्ट हो जाती है ।

कवि भूषण ने छ.शिवाजी महाराज की चढाइयों का बडा सुंदर वर्णन किया है । उन्होंने शत्रुओं पर शिवाजी के आतंक का भी बडा प्रभावपूर्ण वर्णन किया है । छ.शिवाजी की अफजलखाँ से भेंट के समय अफजलखाँ पूरी सावधानी से खडा था लेकिन उसकी सारी सावधानी के बावजूद भी उसका छ.शिवाजी ने वध किया था । उन्होंने गोलकुण्डा और बिजापुर को भयभीत कर दिया था । फ्रांसीसियों और अंग्रेजों को मारकर उन्होंने हबशियों और फिरंगियों के जहाज उलट दिये थे । शिवाजी ने साल्हेर के युध्द में देखते-देखते खान-रुस्तम को हरा दिया था और बडे-बडे सेनापतियों को मारा था (पद क्र.३१)[3] इसप्रकार छ.शिवाजी की वीरता के अनेक उदाहरण औरंगजेब के सामने सदैव आते थे, और वह बार-बार चौंक कर भयभीत होता था । अनेक शत्रु छ.शिवाजी को नजराना भेजकर उनसे मेल करते थे । छ.शिवाजी की वीरता के उदाहरण सुनकर शत्रुओं की हिंमत नष्ट हो जाती थी ।

सारे मुगल सरदार छ.शिवाजी महाराज के आतंक से आतंकित होने के

कारण वे छ.शिवाजी महाराज से लडने के लिए बहुत घबराते थे। इसका वर्णन कवि भूषण ने बहुत अच्छी तरह से किया है। वे औरंगजेब से प्रार्थना भरे स्वर में कहते थे कि हम लोग हिम्मत करके समस्त राजाओं पर चढाई करके उन्हें परास्त कर डालेंगे। चाहे आप कहे तो विदेशी कोठियों को भी हम जीत लेंगे। हम सब आसाम, सिलहट, बलख, बुखारा तथा जहाज पर चढकर समुद्र पार कर चीन और रुम आदि विदेशी देशों को भी जीत लेंगे। उस वक्त हम अपने प्राणों की बाजी लगाकर विजय प्राप्त करेंगे, भले ही इसमें हमारे प्राण चले जाएँ। हम सब सरदार बिना पदवी के रहकर और भीख माँगकर गुजारा कर लेंगे, किंतु हे दिल्लीपति औरंगजेब! कृपया हमें उस प्रतापी शिवाजी से लडने के लिए मत भेजिए। हम शिवाजी पर चढाई करने नहीं जायेंगे वह महाबली है, इसलिए हमें डर लगता है। (पद क्र.२७)[४]

मुगल सरदारों की इसप्रकार की जिद्द और कायरता देखकर छ. शिवाजी महाराज का वीर चरित्र स्पष्ट होता है।

इसप्रकार कवि भूषण ने छ.शिवाजी का तेज वर्णन करने के लिए उनके क्रोधयुक्त व्यक्तित्व और स्वाभिमान का वर्णन किया है। औरंगजेब के दरबार में जाने पर छ.शिवाजी महाराज ने जैसी अपेक्षा की थी, उस रुप में उनका स्वागत औरंगजेब ने नहीं किया। उस वक्त औरंगजेब ने शिवाजी का अपमान किया। शिवाजी महाराज उस अपमान को सह नहीं सके। छ.शिवाजी का मन क्रोध से भर गया। औरंगजेब की शान को देखकर छ.शिवाजी जरा भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने औरंगजेब को न सलाम किया न उससे विनम्र वचन ही कहे। (पद क्र.१४-१५)[५] छ.शिवाजी ने पहली ही मुलाकात में औरंगजेब की उपेक्षा को देखकर अपमान के कारण भरे दरबार में गर्जना की थी। उनकी गर्जना को सुनकर म्लेंच्छ मूर्च्छित हो गये थे। और औरंगजेब के होश उड गये थे और मुख काला पड गया था।

छ.शिवाजी महाराज उस वक्त सबसे ऊपर खडे करने के योग्य थे, लेकिन उन्हें औरंगजेब ने उनका अपमान करने के हेतु छहहजारी मनसबदारों की पंक्ति में खडा किया था। इसी कारण छ.शिवाजी को क्रोध आया था। उस वक्त उन्होंने

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY

शाही कानून के अनुसार कमर की कटारी छीन ली गयी थी । उनके हाथ में अन्य कोई हथियार भी नहीं था, नहीं तो उनके हाथों औरंगजेब पर प्रहार अवश्य होता ।

छ.शिवाजी ने हाथ में हथियार और साथ में सेना के न होने पर भी बादशाह के सामने अपना माथा नहीं झुकाया । इससे छ.शिवाजी का स्वाभिमान झलकता है और उनका क्रोधयुक्त व्यक्तित्व स्पष्ट नजर आता है ।

विजयी शिवाजी का वर्णन कविने बहुत अच्छी तरह से किया है । औरंगजेब ने समस्त क्षत्रिय वंश के राजा-महाराजाओं को परास्त करके उन्हें अपने अधिन करके वह बलवान बन गया था । उसने उदयपुर के महाराणा को भी अपने काबू में रखा था । बलवान औरंगजेब के मातहत अनेक बली-पराक्रमी राजा-महाराजा थे, तब भी उसे छ.शिवाजी को वश करने में अनेक आपत्तियों का सामना करना पड़ा था । (पद क्र.१७)[६] औरंगजेब का यह सारा प्रयत्न व्यर्थ हो गया था । उसका भारी नुकसान भी हो गया था । अंत में उसे अपनी पराजय स्वीकार करनी पड़ी थी ।

यथार्थ दृष्टि से देखा जाय तो शिवाजी महाराज की ताकद औरंगजेब की तुलना में बहुत ही कम थी, लेकिन छ.शिवाजी महाराज ऐसा दिखाना चाहते थे कि मेरी ताकद सबसे अधिक है । औरंगजेब को छ.शिवाजी की ताकद का कोई अंदाजा नहीं था, इसलिए वह छ.शिवाजी से बहुत ही डरता था । उसे ऐसा लगता था कि अपने शत्रु शिवाजी को जैसे भी हो मारना चाहिए, नहीं तो अपना राज्य डूब जायेगा । इस दृष्टि से औरंगजेब प्रयत्न कर रहा था । इतने बलवान औरंगजेब को चालाक शिवाजी ने अपनी हिम्मत और साहस से अपनी ताकद कम होते हुए भी परास्त किया था, उसका गर्व-हरण किया था । सिर्फ शिवाजी महाराज से ही औरंगजेब कर वसूल नहीं कर सका, या उन्हें अपने अधीन नहीं कर सका । छ.शिवाजी को छोड़कर सभी राजा-महाराजाओं को औरंगजेब ने अपने शासन-चक्र में पिसा था । इसी कारण श्रीनगर ,नेपाल आदि के राजा उसे कर, दुर्ग, बाज आदि भेंट देते थे । मेवाड, उदयपुर, जयपुर, बुंदेलखंड, उडीसा, रीवाँ, आदि के राजा

उसकी नौकरी करके औरंगजेब से सुरक्षित थे। ये सब राजा औरंगजेब से बहुत ही डरते थे, लेकिन छ.शिवाजी महाराज को औरंगजेब का भय जरा भी नहीं था। इसके विपरित औरंगजेब छ.शिवाजी के आतंक से आतंकित था। (पद क्र.१६)[७]

छ.शिवाजी महाराज ने औरंगजेब को परास्त करके अपने समस्त देश की लाज बचायी थी। अपने देश को औरंगजेब से परास्त होने से बचाया था। इससे शिवाजी महाराज की चालाकी, हिम्मत और साहस का परिचय मिलता है।

छ.शिवाजी महाराज का आतंक सभी ओर फैल गया था। उनके आतंक से मालवा, उज्जैन, भेलसा और सिरोंज नगर तक के लोगों में भय का वातावरण निर्माण होकर उनमें भगदड मच गयी थी। उसी प्रकार गोंडवाना, तेलंगाना अंग्रेजों की बस्तियों आदि में भय का वातावरण निर्माण होकर उनमें भगदड मच गयी थी। कर्नाटक के लोगों के और रुहेलखंड के लोगों के हृदय थर्राते थे। इस तरह बडे-बडे शूर वीरों का ओर दुर्गाधीशों का धैर्य छूट जाने से उनके भी हृदय थर्राते थे। छ.शिवाजी के आतंक के कारण बीजापुर, गोलकुण्डा, आगरा और दिल्ली के किलों के दरवाजे हमेशा के लिए खुले नहीं रखे जाते थे वे कभी-कभी ही खोले जाते थे। (पद क्र.४४)[८] छ.शिवाजी महाराज के आतंक का इतना प्रभाव शत्रुओं पर पड गया था।

रणक्षेत्र में छ.शिवाजी महाराज स्वयं आगे रहते थे, और उनके पीछे उनकी सेना। जब छ.शिवाजी ने शाइस्ताखाँ पर आक्रमण किया उस वक्त वे स्वयं आगे थे। उन्होंने रात के वक्त अचानक शाइस्ताखाँ पर आक्रमण किया था। शाइस्ताखाँ की सेना को शिवाजी के आक्रमण का अंदाजा भी नहीं लगा था। उस वक्त डर के मारे शाइस्ताखाँ खिडकी से भाग जा रहा था। इतने में छ.शिवाजी महाराज वहाँ पहुँचे। छ.शिवाजी उसे मारना चाहते थे, लेकिन वह खिडकी से भाग गया। उस वक्त छ.शिवाजी के प्रहार से उसके हाथ की उँगलियाँ काट गयी। शाइस्ताखाँ के जान पर आया संकट उसकी उँगलियों पर निभ गया। शिवाजी के सम्मुख उसे गिध्दों की तरह भागना पडा। (पद क्र.२६)[९] इसप्रकार छ.शिवाजी महाराज के सामने मुगल सरदार नहीं आ सकते थे। स्वयं औरंगजेब

भी छ.शिवाजी के सामने नहीं आ सकता, तो अन्य सरदारों का क्या कहना ।
छ.शिवाजी को सामने पाकर औरंगजेब रणस्थल त्याग देता था । उसके बाद
छ.शिवाजी महाराज उसके वजीरों को पकड कर उन्हें सामान्य प्रजा बना कर
छोड देते थे । (पद क्र.३९)[१०] इससे यह सिध्द होता है कि जो कायर है, वह
भाग जाता है और जो वीर है, वह युध्दस्थल से कभी नहीं हट सकता । छ.शिवाजी
महाराज शूर-वीर सिंह की तरह हैं ।

इसप्रकार कवि भूषण ने वीर शिवाजी की सच्चरित्रता का वर्णन अनेक
उदाहरण देकर किया है ।

निष्कर्ष

छ.शिवाजी महाराज सच्चरित्र वीर पुरुष थे। इसलिए कवि भूषण ने उनके चारित्र्य का वर्णन किया है। वे पर स्त्री को माता के समान मानते थे। उनकी ओर आदर की भावना से ही देखते थे न कि कुभावना से। अगर उनका एकाध सरदार शत्रु-स्त्री को भगा कर लाता तो छ.शिवाजी उस स्त्री को सम्मान के साथ वापस भेज देते थे। और उस स्त्री को लानेवाले सरदार को कडी सजा देते थे। छ.शिवाजी महाराज शत्रु-स्त्रियों का या अन्य किसी धर्म के धर्म-ग्रंथों या धर्मस्थानों का न स्वयं अपमान करते और न अपने किसी सैनिक या सरदार को ही ऐसा करने देते। अगर किसी सैनिक या सरदार ने ऐसा किया तो वे उसे मृत्युदंड की सजा देते थे। इस दृष्टि से वे अपने समकालीन मुगल सम्राट औरंगजेब की तुलना में निसंदेह श्रेष्ठतर महामानव थे।

छ.शिवाजी महाराज शत्रु-प्रदेशों की लूट स्वार्थ की भावना से नहीं करते थे। वे हिंदु-राज्य विस्तार के लिए और गरीब लोगों की सहायुयता के लिए करते थे।

छ.शिवाजी के आतंक से देशी और विदेशी कोठियाँ भी आतंकित थी। स्वयं औरंगजेब भी शिवाजी से आतंकित था। छ.शिवाजी का सिर्फ नाम सुनकर ही औरंगजेब और उसके सरदारों की हिम्मत नष्ट हो जाती थी। उनकी कायरता देखकर शिवाजी महाराज का वीर चरित्र स्पष्ट होता है। औरंगजेब ने सब राजा-महाराजाओं को परास्त करके अपने अधीन कर लिया था, लेकिन वे छ.शिवाजी महाराज के सामने जाने से घबराते थे। छ.शिवाजी का आतंक चारों ओर फैलने के कारण शत्रुओं के किलों के दरवाजे सिर्फ आयात और निर्यात के लिए ही खोले जाते थे। वे हमेशा के लिए नहीं खोले जाते थे।

छ.शिवाजी के शत्रु औरंगजेब के अपार ऐश्वर्य एवं पराक्रम का वर्णन खूब बढा-चढाकर करके कवि भूषण ने छ.शिवाजी के यश को बढाया है। और उनकी कीर्ति को सभी ओर फैलाया है। औरंगजेब की शान-शौकत को देखकर

छ.शिवाजी महाराज जरा भी विचलित नहीं हो गये थे। उलटे वे क्रोध से लाल हो गये थे। उनके हाथ में हथियार और साथ में सेना न होते हुए भी वे क्रोध से लाल हो गये थे। उनके सिर्फ क्रोध से ही म्लेंच्छ मूर्च्छित हो गये थे। औरंगजेब के साथ छ.शिवाजी न स्नेहपूर्ण शब्द ही बोले और न उसे उन्होंने झुक कर सलाम भी किया। इससे छ.शिवाजी का क्रोधयुक्त व्यक्तित्व ,प्रचंड प्रताप और स्वाभिमान स्पष्ट दिखायी देता है।

छ.शिवाजी महाराज की युध्द नीति से सब शत्रु सदैव ही आतंकित रहते थे। उन्होंने बीजापुर को नीचा दिखाया,अफजलखाँ का वध किया और शाइस्ताखाँ की दुर्दशा की थी। इसप्रकार बडे-बडे वीर सरदारों को मारा था, इस कारण शत्रु छ.शिवाजी को शैतान ही समझते थे। उस वक्त कोई भी स्थान छ.शिवाजी के आक्रमण से सुरक्षित नहीं समझा जाता था। इसप्रकार शत्रुओं की दयनीय स्थिति का वर्णन करके कविने छ.शिवाजी महाराज की श्रेष्ठता दिखायी है।

मराठा राज्य-विस्तार के कार्य में शत्रुरुपी जो बाधाएँ थीं, उनको नष्ट करके महाराज शिवाजी ने मराठों का राज्य प्रस्थापित किया। इसतरह उन्होंने सभी भारत देश की शान रखी । उनके विचारों में स्वदेश स्वजाति और स्वधर्म प्रेम के भाव थे, इसलिए छ.शिवाजी महाराज हम सब की दृष्टि से एक आदरणीय और पूज्य देवता है। वे भारतीय स्वतंत्र राष्ट्र के आदर्श नवनिर्माता हैं; इसलिए वे अपने युग के ही नहीं युग-युग के लिए भारत के आदर्श लोकनायक हैं।

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठक्र.	प्रकाशनकाल। प्रकाशक संस्करण
१	शिवा-बावनी (विशद भूमिका, शब्दार्थ, पद्यार्थ साहित्य) पद क्र.१९	श्री देवचंद्र विशारद	७०	हिंदी भवन, जालधर और इलाहाबाद, १९६९
२	-वही- पद क्र.२५	-,,-	७५	- वही -
३	-वही- पद क्र.३१	-,,-	७९	- वही -
४	-वही- पद क्र.२७	-,,-	७६	- वही -
५	-वही- पद क्र.१४-१५	-,,-	६६	- वही -
६	-वही- पद क्र.१७	-,,-	६८	- वही -
७	-वही- पद क्र.१६	-,,-	६७	- वही -
८	-वही- पद क्र.४४	-,,-	९०	- वही -
९	-वही- पद क्र.२६	-,,-	७६	- वही -
१०	-वही- पद क्र.३९	-,,-	८७	हिंदी भवन, जालंधर और इलाहाबाद - १९६९

(आ) उदारता --

जिस राजा के पास बिना लोभ का आचार-विचार, बिना कपट की प्रीति, बिना अन्याय का व्यवहार, बिना बुराई का तेज और बिना अभिमान की प्रसन्नता होती है, वही राजा उदार कहलाता है। जो राजा सब धर्म के लोगों को समान दृष्टि से देखता है, वही राजा बडा उदार होता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि महाराज शिवाजी भी उदार हृदय के राजा थे।

छ.शिवाजी महाराज की उदारता के बारे में बहुत अच्छा विवेचन 'शिवराज भूषण' इस ग्रंथ के छंद क्र.१३९ में मिलता है। इस छंद में कवि ने कहा है कि छ.शिवाजी महाराज का आचार-विचार बिना लोभ का है। उनकी प्रीति बिना कपट की है, और उनका व्यवहार बिना अन्याय का है। वे गरीब लोगों का दारिद्र्य दूर करनेवाले राजा है। उनका तेज बुराई से रहित और उनकी प्रसन्नता अभिमान से रहित है।[१] वे सभी लोगों को समान उदारता की दृष्टि से देखते थे, इसलिए वे बडे उदार हृदय के राजा थे।

भारत जैसे धर्मप्राण देश में अनेक जातियाँ, अनेक धर्मों, अनेक संप्रदायों और वर्णों के निवासी रहते हैं, इसलिए छ.शिवाजी महाराज की उदारता देश, जाति, धर्म, वर्ण और संप्रदाय से परे थी। उनके राज्य में सभी जातियों, वर्णों, और संप्रदायों के अनुयायी सुखी थे। छ.शिवाजी महाराज बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय की दृष्टि से ही बडी उदारता से प्रयत्न कर रहे थे, और अंत में उन्होंने सभी लोगों को सुखी ही रखा। उनकी उदारता की नीति कर्ण के समान थी।[२]

कवि भूषण कहते हैं कि शरणागतजनों को उदार हृदय से अभयदान देनेवाले सिर्फ छ.शिवाजी महाराज ही एक राजा थे। वे छ.शिवाजी को दरिया-दिल कहते हैं। राजा शिवाजी में हिंदू और मुसलमान दोनों लोगों के प्रति सद्भावना थी। उन्होंने दोनों के साथ समान उदारता से बर्ताव किया था। वे मुस्लिम धर्म को सदैव सम्मान की दृष्टि से देखते थे, इसलिए स्वयं मुसलमान-इतिहासकारों ने भी

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

खुल्ले हृदय से छ.शिवाजी महाराज की प्रशंसा की है। श्री.खफी खाँ ने लिखा है ---

`शिवाजी ने एक नियम बना दिया था कि जब कभी उनके अनुयायी अधिकारी-गण लूट-पाट करें, तब वे मसजिद के धर्मग्रंथ और स्त्रियों को किसी भी प्रकार की हानि न पहुँचाये। जब कभी उनको पवित्र कुरान की कोयी प्रति मिली, उन्होंने उसे सम्मानपूर्वक रखा और अपने मुसलमान अनुयायियों को उसे दे दिया। जब कभी किसी मुसलमान की कोई स्त्री उनके आदमियों द्वारा कैद कर ली गई, और उन्होंने उसकी रक्षा करनेवाला कोयी मित्र नहीं देखा तो स्वत: शिवाजी ने उस पर दृष्टि रखी। [3]

कवि भूषण के अनुसार छ.शिवाजी में उदारता और सुशीलता शोभित होती है। वह उदारता और सुशीलता सोने में कोमलता की तरह जान पड़ती है। ऐसी उदारता का चित्रण भूषण ने `शिवा-बावनी` इस ग्रंथ में अनेक पदों में किया है --

जो लोग छ.शिवाजी के अतिरिक्त अन्य राजाओं की शरण में जाते थे, उनकी रक्षा वे राजा नहीं कर सकते थे, लेकिन जो छ.शिवाजी की शरण में जाता था, उसे निडरतापूर्वक अपने यहाँ बसने के लिए उसके सिर पर पगड़ी सी बाँध देते थे, मानो उसको निर्भय रहने के लिए किला ही बनवा देते हों। [4]

छ.शिवाजी महाराज के हृदय में कवियों के प्रति प्रेम और शत्रुओं के प्रति जो रोष था, वह एक-सा दिखायी देता है। दोहा ही कहने पर वे कवियों को जिलाते थे और दोहाई कहने पर शत्रुओं को भी जीने देते थे। [5]

शरणागत शत्रुओं पर छ.शिवाजी महाराज कभी भी हाथ न उठाते थे। छ.शिवाजी की क्रोधाग्नि से सभी पानीवाले शत्रु जल जाते थे, लेकिन एक आश्चर्य की बात है कि तिनका होठों से पकड़ लेने पर याने शत्रु के छ.शिवाजी की शरण में आ जाने पर वे छ.शिवाजी द्वारा जलाये नहीं जाते थे, उन पर अत्याचार नहीं किया जाता था, या उनका वध भी नहीं किया जाता था, बल्कि उस शत्रु को

जीवन दान दिया जाता था । इसका एक उदाहरण 'शिवा-बावनी' के छंद क्र.२८ में दिया है

जाव्ली के आक्रमण के अवसर पर जब छ.शिवाजी ने चंद्रराव मोरे को नष्ट कर जाव्ली को अपने अधिकार में कर लिया था, उस वक्त चंद्रराव मोरे के साथ हुए व्यवहार को देखकर शृंगारपुर का राजा सूर्यराव छ.शिवाजी की शरण में चला गया था । छ.शिवाजी ने केवल शरण में आने के कारण ही उसे उदारता से छोड दिया था ।

कवि भूषण छ.शिवाजी महाराज को हरि का अवतार मानते थे, क्योंकि हरि के सब गुण वे छ.शिवाजी में देखते थे । छ.शिवाजी ने उदार अंतःकरण से इस संसार का प्रतिपालन किया था । जिसप्रकार उन्होंने सब शत्रुओं को मारकर राजाओं का उद्धार किया था, उसी प्रकार उन्होंने बडे-बडे पहाडों पर भी किले बनवाकर उनका भी उध्दार किया था । इन पहाडो ने छ. शिवाजी की अपार कृपा से ही बडा सुख पाया है ।

अनेक पहाडों ने छ.शिवाजी की शरण ली थी, इसलिए उन्होंने किले बनवाकर उनको सदाम कर दिया है, उनका उध्दार कर दिया है ।[६]

छ.शिवाजी महाराज साधु,संत,जोगी,काजी,फकीर आदि धार्मिक व्यक्तियों पर कभी भी हाथ उठाते नहीं थे । उनका वे सम्मान करते थे । उनकी ओर से पूज्य और सम्मान की दृष्टि से देखते थे । इसके अनुसार 'शिवा-बावनी' के छ.क्र.२४ में भूषण ने लिखा है कि सलहेरि के युध्द के अवसर पर घमासान युध्द हो रहा था । उस वक्त छ.शिवाजी ने खोज-खोज कर मुगल सेनापतियों को मारा था । मुगलों के अनेक सेनापति छ.शिवाजी द्वारा मारे और पकडे गये थे । सरजाखाँ काजी होने के बहाने बच गया था । छोटे राजा और बडे सरदार ब्रह्मचारी के बहाने बच गये थे । जान बचाने के लिए इन सरदारों ने ऐसे धार्मिक व्यक्तियों का बहाना किया था और वे छ.शिवाजी से बचे थे ।

इस प्रकार सभी धर्मों के व्यक्तियों की ओर छ.शिवाजी समान उदारता से

देखते थे। शिवा-बावनी के छंद क्र.१८,१९ और २० आदि में छ.शिवाजी ने हिंदुओं के देवी-देवताओं और धार्मिक व्यक्तियों पर होनेवाले अत्याचार के विरुध्द बगावत ठान ली थी , जिससे शत्रु औरंगजेब की हार हो गयी थी। और सभी देवी-देवताओं को निश्चिंत कर दिया था। देवताओं की तरह उन्होंने मानवता धर्म को भी स्थिर रखा था।

पद क्र.१९ में बताया है कि औरंगजेब मनमाने अत्याचार कर रहा था । हिंदुओं के देव-मंदिरों को गिराकर सर्वत्र इस्लाम धर्म का प्रचार कठोरता के साथ कर रहा था। हिंदुओं को मजबूर बनकर मुसलमान होना पड़ता था ,नहीं तो उनका जीना मुश्किल बन गया था। बहुत से हिंदु लोग मुस्लिम बन गये थे। औरंगजेब ने सिध्द और महात्माओं का विनाश करके सर्वत्र पीर-पैगबरों की वृध्दि की थी। सभी जगह काजी और फकीर ही दिखायी दे रहे थे। उस वक्त हिंदुओं के चारों वर्णों के लोग मन ही मन भयभीत हो गये थे। इसप्रकार औरंगजेब ने हिंदुओं की बड़ी दयनीय स्थिति कर दी थी।

हिंदुओं पर होनेवाले अत्याचार और हिंदु देवी-देवताओं की दयनीय स्थिति देखकर छ.शिवाजी जैसा उदार राजा कैसे चुप रह सकता ? उन्होंने उस समय अपनी वीरता से शत्रुओं को चुन-चुनकर कत्ल कर दिया। सभी शत्रुओं को मार कर बड़ी उदारता से भारत देश की शान बचायी है। उन्होंने ऐसा एक भी शत्रु नहीं रहने दिया कि जो हिंदुओं पर अत्याचार करे और देवी-देवताओं पर कुदृष्टि रखे। इसप्रकार शत्रुओं का नाश करके उन्होंने मानवता धर्म और देवताओं को सुस्थिर किया। उसवक्त शत्रुओं को छ.शिवाजी ने अपनी सेना के जोर से पीस डाला। उन्होंने अपने पंजे के बल पर मुसलमानों को मसल दिया था। जिन्होंने उस समय दीनता स्वीकार की वही शत्रु लोग छ.शिवाजी से बच गये थे। बलवान और पराक्रमी औरंगजेब की एक भी बात छ.शिवाजी ने चलने नहीं दी थी। (पद क्र.२५)

सूरत जैसा संपन्न शहर मुगलों के हाथ में था। वह एक व्यापारी केन्द्र एवं बंदरगाह था। छ. शिवाजी महाराज ने सूरत को दो बार लूटकर उसका रस चूस

लिया था । इस लूट से छ.शिवाजी को अपार धन मिला था, लेकिन उस सब धन-संपत्ति का उपयोग उन्होंने अपने राज्य को सुव्यवस्थित करने के लिए और राज्य-विस्तार करने के लिए किया । छ.शिवाजी ने सूरत शहर को स्वार्थ के लिए नहीं लूटा था । बडी उदारता से उन्होंने लूट में मिला हुआ धन अपने राज्य का विस्तार करने के लिए किया । (पद क्र.२५)

औरंगजेब छ.शिवाजी महाराज के भय के कारण रणस्थल त्याग देता था । वह छ.शिवाजी के सामने नहीं आ सकता था । उस वक्त छ.शिवाजी औरंगजेब तथा उसकी सेना का घमंड चूर-चूर करते थे । छ. शिवाजी को सामने पाकर उससे डरकर रण से औरंगजेब के भाग जाने पर छ.शिवाजी उसके वीरों को पकड़कर मामुली प्रजा बनाकर बडी उदारता से छोड देते थे । विजयी होने के कारण वे ब्राह्मणों को उदारता से भोजन और दान देते थे । (पद क्र.३९) छ. शिवाजी युध्द के बाद हमेशा ही उदारता से ब्राह्मणों को कुछ न कुछ दान देते थे ।

इसप्रकार छ.शिवाजी ने वीरता से अपने अनेक शत्रुओं को मार डाला और उनकी संपत्ति लूटी । इसी संपत्ति का उपयोग करके उन्होंने अपने हिंदु - राज्य की प्रतिष्ठा और हद्द बढायी । अत: स्पष्ट है कि छ. शिवाजी महाराज की भावना बडी उदारता की थी ।

निष्कर्ष

छ.शिवाजी महाराज निस्वार्थी थे। वे दूसरों से कपट रहित प्यार करते थे। उनके राज्य में न्यायव्यवस्था अच्छी थी। गर्व उन्हें जरा भी छू नहीं गया था। वे सभी धर्मीय लोगों को समान उदारता की दृष्टि से देखते थे। उनके राज्य में अनेक जातियाँ, अनेक धर्म,अनेक संप्रदाय और सभी वर्णों के लोग थे। छ.शिवाजी की नीति कर्ण के समान उदारता की थी। वे शरणागत शत्रुको अभय-दान देते थे। उनकी प्रशंसा मुसलमान - इतिहासकारों ने भी की है।

छ.शिवाजी जितने मृदु थे उतने ही कठोर भी थे। छ. शिवाजी हरि के समान ही जान पड़ते हैं क्योंकि हरिने इस संसार का निर्माण किया और छ. शिवाजी ने उसका उध्दार किया है। उन्होंने सब हिंदु राजाओं का और बड़े-बड़े पहाड़ों का भी उध्दार किया है। वे देवी-देवताओं के मंदिर,मसजिद और धार्मिक व्यक्ति आदि सब का सम्मान करते थे। उसी तरह वे धर्म-ग्रंथों का भी सम्मान करते थे। धार्मिक अत्याचार वे सह नहीं सकते थे, इसलिए उन्होंने औरंगजेब जैसे कट्टर मुसलमान धर्मीय शत्रु को पस्त हिम्मत कर सभी धर्मीय लोगों को और देवी-देवताओं को स्थिर किया। और शत्रु की सभी संपत्ति लूटकर अपने हिंदु-राज्य की प्रतिष्ठा और हद बढ़ायी, इसलिए छ.शिवाजी महाराज एक सच्चे उदार हृदय के राजा थे।

संदर्भ सूची

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठ क्र.	प्रकाशक-प्रकाशनकाल संस्करण
१	महाकवि भूषणकृत शिवराज-भूषण (सटीक)	प्रतापनारायण टंडन	२३	विधामंदिर,सनीकटारा लखनऊ । सितंबर १९५४
२	-वही-	- वही-	९	-वही-
३	वीरकाव्य	डॉ.उदयनारायण तिवारी	२९२	भारती भंडार,लिडर प्रेस, इलाहाबाद । द्वितीय संस्करण - २०१२ वि.
४	हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधी कवि	डॉ.द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	३९२	विनोद पुस्तक मंदिर आगरा । षष्ठ संस्करण १९७९
५	महाकवि भूषणकृत शिवराज भूषण (सटीक)	प्रताप नारायण टंडन	२०	विधामंदिर,रानीकटारा लखनऊ । सितंबर १९५४
६	शिवराज भूषण	महाकवि भूषण	१२५	किताबघर, मेनरोड, गांधीनगर,दिल्ली ११००३१ प्रथम संस्करण -नवंबर १९८२

इ) वीरता --

वीर नायक उसे कहा जाता है, जिसने अपनी वीरता के बूते पर किसी राज्य की स्थापना की हो, जो किसी युग की सभ्यता और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करनेवाला महापुरुष हो, जिसने मानवता का संदेश दिया हो या मानवता के रक्षणार्थ अपना जीवन लगा दिया हो ।[1] इस परिभाषा के अनुसार कवि भूषण की 'शिवा-बावनी' के नायक वीर शिवाजी ही साबित होते हैं । उन्होंने अपने हिंदु राज्य की स्थापना वीरता से की है, और सभ्यता और भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व किया है । उसी के साथ उन्होंने मानवता के रक्षणार्थ अपना सारा जीवन बिताया है, इसलिए वे भूषण के वीर नायक हैं । भूषण ने छ. शिवाजी की चरित्रगत वीरता का वर्णन किया है । इसमें उन्होंने छ. शिवाजी के शौर्य और अदम्य साहस का वर्णन किया है ।

वीरता का वर्णन करते वक्त उसके चार अलग-अलग विभाग किए जाते हैं -- (१) युध्दवीर, (२) धर्मवीर (३) दानवीर और (४) दयावीर [redacted] ।[2] तदनुसार कवि भूषण ने महाराज शिवाजी के युध्दवीर , धर्मवीर, दानवीर और दयावीर आदि के गुणों का वर्णन किया है । यहाँ इन चारों प्रकार के वीरों के अनेक उदाहरण दिये गए हैं ---

१) युध्दवीर ---

युध्दवीर के वर्णन में चतुरंगिणी सेना, वीरों की गर्वोक्तियाँ, योध्दाओं का शौर्य, रणवाद्य, सेना का कोलाहल, आघात करना और आक्रमण करना आदि बातों का चित्रांकन होता है । कवि भूषण ने इन सभी बातों का वर्णन सफलतापूर्वक किया है । युध्दवीर का वर्णन करते वक्त अध्ययन की सुविधा के लिए उसके अलग - अलग विभाग किए हैं ((१) रण-प्रस्थान (२) रण-वर्णन (३) आतंक वर्णन (४) पराक्रम वर्णन (५) तलवार वर्णन आदि । इन पाँचो विभाग के अनेक उदाहरण कवि भूषण ने 'शिवा-बावनी' में दिए हैं ।

(१) रण-प्रस्थान वर्णन --

जिस समय छ.शिवाजी महाराज युध्द के लिए प्रस्थान करते थे,उस समय का दृश्य तो बहुत अच्छी तरह से अंकित किया है। ' शिवा-बावनी ' में छ.शिवाजी के रणप्रस्थान का वर्णन इसप्रकार किया है --

जब सरजा शिवाजी महाराज युध्द के लिए जाते थे तब वे बडे उत्साह से अपनी चतुरंगिनी सेना तैयार करके स्वयं वे घोडे पर सवार होकर युध्द में विजय प्राप्त करने के लिए चलते थे। उस वक्त उनके झंडे फहराते थे। उनकी सेना के अग्र-भाग में घोंसा और नगाडे जैसे अनेक रणवाद्य बजते थे, जिससे उनकी सेना के हृदय उत्साह से भर जाते थे। उनके हाथियों के धक्कमधक्के से और सेना के चलने से धूल के बादल इतने उठते थे कि आकाश भी दिखायी नहीं दे सकता था। उस समय पृथ्वी भी काँप उठती थी, जिससे समुद्र भी हिलता था।[3]

ऐसा वर्णन पढकर या सुनकर डरपोक आदमियों का भी हृदय उत्साह से भर जाता है। छ.शिवाजी की सेना तो रणवाद्य सुनकर तुरंत ही उत्साहित होकर युध्द में जाने के लिए तैयार होती थी। उनके साथ भूषण जैसे वीर कवि भी वीर-काव्य सुनाने के लिए जाते थे,जिनका काव्य सुनकर वीरों में उत्साह भर जाता था।

कवि भूषण ने छ.शिवाजी का क्रोधोन्मुख व्यक्तित्व स्पष्ट किया है। छ.शिवाजी के क्रोध से बडे-बडे पानीदार शत्रुओं का पानी उतर जाता था उनकी सक्रोह भौंह के तनते ही भैरव, भूत,प्रेत,निशिचर,जोगिनी,काली और शिव प्रसन्नता प्रकट करते थे। ये सब लोग मिलकर बधाई गाते थे। पर्वतों के समान भयंकर भूत - प्रेत ,भैरव और योगिनियाँ आदि एकत्र आकर गाते और नाचते थे। प्रसन्नता के कारण कालिका किलकारी मारकर नृत्यादि खेल करती थी। सभी के साथ महादेवजी भी डिमिडिया डमरु बजाते थे। इन सब लोगों को आनंद होने का कारण एकही था, कि छ.शिवाजी महाराज का क्रोध। वे इसलिए आनंद प्रकट करते थे कि जब छ.शिवाजी क्रोधित होकर किसी के साथ युध्द करते थे, तब युध्द में मरे हुए वीरों का मांस और खून उन्हें मिलता था। मांस मिलने की और रुधिर मिलने

की आशा से ही ये सब आनंद से नृत्य और गायन करते थे।

इसप्रकार महादेवजी का सारा समाज आनंदोत्सव मना रहा है, यह देखकर पार्वती ने महादेवजी से पूछा कि आपका समाज आज कहाँ जा रहा है ? उस वक्त महादेवजी पार्वती से कहते हैं कि छ.शिवाजी महाराज ने किसी पर क्रोध किया है, इसलिए ये लोग आनंदोत्सव मना रहे हैं।[४]

कवि भूषण ने युध्दवीर के इस पद में कालिका देवी का उल्लेख किया है। दुर्गा या भवानी के पति भूतनाथ का भी उल्लेख किया है। कवि ने भूतनाथ के यथार्थ स्वरूप का चित्रण किया है। इसप्रकार कवि भूषण ने 'शिवा-बावनी' के पद क्र.१ और ३ में छ.शिवाजी महाराज के रण-प्रस्थान का वर्णन किया है।

(२) आतंक वर्णन --

कवि भूषण ने पद क्र.६ और ८ में छ.शिवाजी की धाक से भयभीत शत्रु स्त्रियों का वर्णन किया है। इसमें स्त्रियों की स्थिति का यथार्थ वर्णन किया है। छ.शिवाजी द्वारा युध्द क्षेत्र में औरंगजेब के योध्दाओं, घोडों, हाथियों आदि को काट-काटकर ढेर लगा दिये गये थे।[५] यह काम छ.शिवाजी के शस्त्रास्त्र ने किया था। इसीकारण उनका आतंक चारों ओर फैल गया था। छ.शिवाजी की धाक के मारे दिल्ली और विलायत की सभी स्त्रियाँ रात-दिन बिलबिलाती रहती थीं। मुगलों की बेगमें तो आगरा के राजमहल की चहारदीवारी को भी नहीं लाँघती थीं। वे संकट काल में चहारदीवारी फाँदकर आत्मरक्षा करने के लिए भागती थीं। भागते वक्त वे अपने बाल तक नहीं सँभालती थीं। उनके मुख कुम्हला जाते थे। छ. शिवाजी के भय के मारे बेगमें अत्यंत दीन होकर अपनी-अपनी सुथन्नियाँ पकडे हुए और रानियाँ अपनी-अपनी साडी की गाँठ पकडे हुए भागी जाती थीं।[६]

जो स्त्रियाँ पलंग से उतरकर पृथ्वी पर पैर भी नहीं रखती थीं, वे भी भयभीत होकर रात-दिन भागती रहती थीं। वे अपने शरीर को ढँक भी नहीं सकती थीं। वे बेचैन हो जाती थीं। उन्हें किसी की बात अच्छी नहीं लगती थी। कोई उन्हें

बोलता तो चिढ जाती थीं । जो स्त्रियाँ सुकुमारता के कारण चाँदनी में भी नहीं चल सकती थीं वे अब कड़ी धूप में भी चलतीं जाती थीं । महलों में तीन बार भोजन करनेवाली स्त्रियाँ अब जंगल में दो या तीन बेर खाकर गुजारा करती थीं ।[७]

इसप्रकार कवि भूषण ने छ.शिवाजी महाराज के आतंक से आतंकित शत्रु-स्त्रियों का वर्णन पद क्र.६ और ८ में किया है ।

(३) रण - वर्णन --

रण-प्रस्थान और आतंक वर्णन की तरह कवि भूषण ने छ. शिवाजी के रण का भी वर्णन किया है । पद क्र.२३ में लिखा है कि सन १६७० ई में सलहेरि की युध्द-भूमि पर घमासान लडाई हो रही थी । छ.शिवाजी की तलवार इतनी तीव्रता के साथ रण-क्षेत्र में चलती थी कि वह सर्पिनी के समान शत्रुओं के दल के दल खा जाती थी ,हाथियों की लोहे की झूलें एवं जिरह बख्तरों में मछली की तरह पार हो जाती थी । छ. शिवाजी ने उस वक्त पंख कटे पक्षियों की तरह काट-काटकर रणक्षेत्र में उनकी लाशों के ढेर लगा दिये थे । औरंगजेब की सेना की ओर से उसके मतवाले हाथियों के झुंड काले बादलों के से आते थे । छ. शिवाजी ने उसके हाथियों के मस्तक फाड डाले । वे हाथी जोर से चिंघाडते थे । शेख, सैयद, मुगल और पठानों की सेनाओं की भीड को कोई सरदार नहीं सँभाल सका । हिंदुओं की सीमा,मर्यादा और वीरता की रक्षा करके महाराज शिवाजी ने अनेक बार दिल्ली का अभिमान चूर-चूर कर दिया था ।[८]

सलहेरि किले को जीतने के लिए औरंगजेब ने एक-एक करके अनेक चुने हुए सरदार भेजे थे । इसलिए छ.शिवाजी को भयंकर युध्द करना पडा था । उन्होंने खोज-खोज कर मुगल सेनापतियों को मारा था । इस किले को मुगलों ने सभी ओर से घेर लिया था । इस घेरे का नेतृत्व इखलास खान कर रहा था । बहलोल खान,अमरसिंह,चंदावत, मोहकमसिंह की ओर से प्रतापराव एवं आनंदराव सेना का संचालन कर रहे थे ।[९]

उस समय घनघोर युध्द हुआ अमरसिंह चंदावत मारा गया । मोहकमसिंह,

इखलासखान और बहलोलखान पकड लिए गये । मुगलों के अनेक सेनापति मारे गये या कैद हुए । सैयद और पठानों का संहार हुआ । दिलेरखान बलहीन हुआ । बहादुरखान का सारा परिश्रम व्यर्थ गया । सुजानसिंह जैसे साहसी वीर को प्राण खोने पडे । अंत में विजय छ.शिवाजी की हुई ।

औरंगजेब को इस स्थिति का ज्ञान होने पर उसका रंग उड गया । सारे मुसलमानों के कलेजे धडकने लगे । देवलोक में आज भी मुगल, पठान और छ.शिवाजी के वीरों की तलवारें खलखडा रही हैं । बडे-बडे भूतों के घरों में टँगी हुवी चंदावल राजपूतों की लोथें हिल रही हैं । छ.शिवाजी ने शत्रुओं की सेना को काट-काट कर कीडे-मकोडों की तरह उडा दिया । उस वक्त रणभूमि में कोयी मृत वीर कफन में लपेटा नहीं था वे सब अर्धखंडित अवस्था में अब भी पडे हुए हैं [१०]

पद क्र.२१ में बताया है कि छ.शिवाजी महाराज ने राज्य की सीमा बढाकर मुगल बादशाहों से बराबरी करने के लिए ही अनेक युध्द किये थे । उनके हठी मरहठों ने अपना एक भी किला नहीं छोडा । सब किले मुगलों से छीन लिए और किलेदारों के सब हथियार भी छीन लिए । उनके हथियार छीन लेने के कारण वे जंगल में बनजारों की तरह घूम रहे थे । रणस्थल में मांस खानेवाले मांसाहारी भूत-प्रेतादि मांस खाकर आनंद से ताली बजा-बजाकर नाचते थे । मराठों ने शत्रुओं की चौडी तलवारें, तोडेदार बंदूकें और किरचे ये सब हथियार काटकर उसके टुकडे टुकडे कर तारों की तरह उडा दिये गये थे । वे टुकडे सभी और फैंक देने के कारण तारों के समान दिखायी देते थे । हाथी के समान डील-डौलवाले शत्रु पहाड की तरह भरभराकर गिर पडते थे ।

कवि भूषण ने छ.शिवाजी के युध्द-पराक्रम और रण-कौशल का अत्यंत ओजस्वी वर्णन छंद क्र.२२ में किया है । उनके साहस का वर्णन बहुत अच्छी तरह से किया है । रणक्षेत्र में इतनी घमासान लडाई हो रही थी कि चारों ओर से बाण छूट रहे थे और गोलियाँ चल रही थीं, परंतु छ.शिवाजी टस से मस न हुए । ऐसे समय वीर शिवाजी ने अपनी सेना को दुर्ग पर आक्रमण करने की आज्ञा दी और स्वयं शिवाजी भी शत्रु के किले पर चढकर मारकाट मचाते हुए किले में कूद पडे ।

उस समय उनकी हिम्मत का वर्णन कौन कर सकता ? उनकी वीर मंडली में इतनी बहादुरी थी कि वे मूँछों पर ताव देकर कँगूरों को लाँघते हुए शत्रुओं को चोट पहुँचाकर किले के भीतर कूदे जा रहे थे।

कवि भूषण के इन वर्णनों में युध्द कौशल से परिपूर्ण वीर भावना की अत्यंत सजीव अभिव्यंजना हुई, जिसमें इन वीरों को विख्यात युध्दवीर के पदपर प्रतिष्ठित किया गया है। इसमें भूषण के प्रत्येक शब्द से तेज एवं पौरुष झलकता हुआ नजर आता है। उबलते हुए दूध के समान उत्साह उफन आता है।

महाराज शिवाजी ने सारी पृथ्वी में आतंक भर कर शत्रुओं को कत्ल कर दिया था। शत्रुओं के सिर पर वे ऐसी तलवार चलाते थे और शत्रुओं की इतनी फौजों को मारते थे, कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। शत्रु-संहार से रणक्षेत्र में रक्त का सागर इस प्रकार लहरा उठता था कि उससे बचने के लिए कपाली शिवजी बैल की पूँछ पकड़कर तैरते थे और काली माँस के पहाड पर चढकर खून के समुद्र में डूबने से आत्मरक्षा करती थी।[११]

छ.शिवाजी ने शत्रुओं को पराजित कर और मारकर विशाल यश प्राप्त किया। उन्होंने शिवजी को मुण्डमाला और उनके गणों को आहार दिया था। छ.शिवाजी द्वारा युध्द में काटे हुए शत्रुओं की मुंडमाला के बोझ से शंकरजी के नंदी के पैर लचक गए थे। और शेष नाग के सहस्त्र फन तथा कच्छप की पीठ कुचल गयी थी।

इसप्रकार कवि भूषण ने छ.शिवाजी महाराज का रणवर्णन करने के लिए चण्डी और भूत-प्रेतों का समावेश किया है। उन्होंने भयंकर जननाश से उमडते हुए खून के समुद्र पर और छ.शिवाजी के साहस पर बहुत अच्छी लेखनी चलायी है। और अपने चरित्र नायक की रण-वीरता का परिचय दिया है।

(४) <u>तलवार - वर्णन --</u>

कवि भूषण ने छ.शिवाजी महाराज की तलवार का वर्णन पद क्र.३८, ५०,५१ में किया है। पद क्र.३८ में लिखा है कि महाराज शिवाजी ने

अपनी चतुरंगिनी सेना की सहायता से आक्रमण करके शत्रुओं के नगर उजाड़ दिये थे। इस वक्त धन देकर इकट्ठी की हुई शत्रु की सेना को उन्होंने काट डाला। इस संसार में यह प्रकट है कि छ.शिवाजी महाराज युद्धवीर और महाबलवान है। उनके सामने बलवानों के भारी आघातों की कुछ भी नहीं चलती। उनके आतंक से दिल्ली में भूकंप हो गया था, जिससे दिल्लीवासी थर्राते थे। औरंगजेब तो दीवारों में भी अपनी आँखे रखता था। जिस वक्त छ.शिवाजी क्रोध करके अभिमानपूर्वक अपनी तलवार खींचते थे, उस वक्त काबुल और कंधार देश के वीर काँप उठते थे, क्योंकि उनकी तलवार इतनी तीव्रता के साथ रणक्षेत्र में चलती थी कि सर्पिणी के समान शत्रुओं के दल के दल नष्ट करती थी।

छ.शिवाजी ने तलवार से ही दिल्ली की सेना को पराजित करके समस्त संसार की मर्यादा रखी। और हिंदुत्व और हिंदुओं के तिलक की रक्षा की। (पद क्र.५०) उन्होंने अपनी तलवार से शत्रुओं को गाजर मूली की तरह काट कर देवता, देव-मंदिर एवं स्वधर्म की रक्षा की थी (पद क्र.५१) इसप्रकार कवि भूषण ने छ.शिवाजी महाराज की तलवार का वर्णन किया है।

(५) पराक्रम - वर्णन --

कवि भूषण ने छ.शिवाजी महाराज के तलवार - वर्णन के साथ उनके पराक्रम का भी वर्णन अनेक पदों में किया है। छ.शिवाजी ने मुगल, पठान, शेख और सैयद जैसे वीर शत्रुओं को पराजित किया, जिन्होंने काबुल-कंधार और खुरासान जैसे देशों को पराजित किया था। छ.शिवाजी के भय के कारण भयंकर पहाड़ बावनी, बकंजा और मारवाड़ के निवासियों की आँखों की ज्योति चली गई थी। शिवाजी के प्रकट होने से यह ज्ञात हुआ कि राजा ही बड़े होते हैं। छ.शिवाजी के पूर्व काल में बादशाहों को ही बड़ा माना जाता था।[१२]

छ.शिवाजी ने मोरंग, कुमाऊँ और पलाऊँ राज्यों के राजाओं को तो तुरंत ही पराजित करके बाँध लिया था। इसप्रकार बड़े-बड़े राजाओं को परास्त करके उन्होंने अपने राज्य की सीमा और बल बढ़ाया था। वे सन १६७६ से १६७८

तक अठारह महीने कर्नाटिक वश करने में लगे रहे थे। छ.शिवाजी महाराज की ऐसी प्रचंड और प्रभावपूरित चढाई और कोयी दूसरी नहीं थी। इस चढाई का वर्णन तो कविने बडे उत्कृष्ट छंदों में किया है।

पद क्र.३५ में ऐसा लिखा है कि छ.शिवाजी ने अनेक किले तोडकर अनेक किलेदारों को दंड किया था। अनेक किलेदारों को पकडकर उनको भिखारी बनाकर धर्म के नाम पर छोड भी दिया था। धर्म के नाम पर छोडे हुए किलेदार जंगल में जंगलियों की भाँति घूमते थे। उन्होंने अनेक वीर शत्रुओं को कारागार में डाल दिया था। बडे-बडे पद धारण करनेवाले शेख, सैयद और हजारी पद धारण करनेवालों को साधारण प्रजा की तरह पकड लिया था। बडे-बडे महाराजाओं को भी गाँव के मुखियों के समान साधारण लेन देन का काम करनेवालों के सदृश्य पकड लिया था। इसतरह पठानों को भी गाँव के पटवारियों की तरह पकड लिया था। इन सब शत्रु लोगों को छ.शिवाजी ने दंडित किया था।

छ.शिवाजी की दृष्टि से बडे-बडे राजा महाराजा और अधिकारी-गण साधारण व्यक्ति ही थे। ये सब लोग छ.शिवाजी से बहुत आतंकित थे। उनके आतंक के कारण वे अपनी विशेषता को खो बैठे थे, इसलिए छ.शिवाजी उन्हें साधारण जनता की भाँति पकड कर दंडित करते थे या उन्हें कारागृह में डाल देते थे।

कवि भूषण ने पद क्र.३६ और ३७ में छ.शिवाजी के भयंकर युध्दों के दृश्य अंकित किए हैं। उन्होंने शिवाजी की युध्दवीरता को पौराणिक संदर्भ में बताना है और उन कथाओं के माध्यम से छ.शिवाजी का पराक्रम अंकित किया है। उन्होंने छ.शिवाजी को अर्जुन,राम,शंभु,सिंह,गणेश,भीम,गरुड,बाज,परशुराम ,बलराम नृसिंह, इंद्र,बडवानल,पवन,सूर्य,कृष्ण,कालिका आदि के समान शत्रुनाशक कहकर पौराणिक कथाओं और लोकानुभव के द्वारा छ.शिवाजी की वीरता का गौरव किया है। उन्होंने शिवाजी को अनेक उपमाएँ दी हैं। इनमें पौराणिक पात्रों के संदर्भ और उनसे छ.शिवाजी की तुलना की है। भूषण ने जिसप्रकार अत्याचार करनेवालों का नाश करनेवाले पौराणिक उदाहरण दिए हैं, उसी प्रकार भूषण

के जमाने में अत्याचारी मुगलों का नाश करनेवाले महाराज शिवाजी थे। उन्होंने अपनी चतुरंगिनी सेना के सहारे मुगलों की चतुरंगिणी सेना को नष्ट कर दिया।

भूषण कहते हैं कि औरंगजेबरूपी हाथी का मस्तक विदीर्ण करने के लिए सिंहरूपी शिवाजी हैं। छ.शिवाजी को सिंह कहकर उनकी वीरता का वर्णन किया है। उन्होंने पौराणिक उदाहरण देकर छ.शिवाजी के अद्वितीय शौर्य, अनुपम पराक्रम एवं असाधारण तेज का निरूपण किया है। उनके अद्वितीय साहस का वर्णन इसप्रकार किया है ---

औरंगजेब छ.शिवाजी को सामने पाकर भाग जाता था। छ.शिवाजी के आगे उसका कुछ नहीं चलता था। वह रणक्षेत्र छोड़कर भाग जाता था। उसकी बाकी की सेना को छ.शिवाजी पकड़कर मामूली प्रजा बनाकर छोड देते थे। इससे यह अनुमान निकलता है कि औरंगजेब डरपोक था और छ.शिवाजी महाराज सिंह के समान वीर थे।[१३] इसप्रकार कवि भूषण ने छ.शिवाजी महाराज के पराक्रम का वर्णन किया है।

जिन युध्द घटनाओं का उल्लेख शिवा-बावनी इस ग्रंथ में हुआ है, उसकी तालिका —

	घटना	पद संख्या	सन्
१	सलहेरि का युध्द	२३,२४	सन् १६७०
२	सूरत की लूट	२५	५ जनवरी सन १६६४ ई.
			१३ अक्तूबर १६६०
३	जसवंतसिंह से युध्द	२६	सन् १६६३
४	जावली को जप्त करना	२८	सन् १६५६
५	पन्हाळा और सीतारागढ जीत लिये	४३	सन् १६७२
६	कर्नाटक पर स्वारी	४३	सन् १६७७-७८

२. धर्मवीर --

जो धर्म के प्रति निष्ठा रखकर धर्मग्रंथों का पठन या श्रवण करता है, और धर्मानुकूल आचरण करता है, स्वधर्म रक्षणार्थ प्राणों की बली लगाता है, वही सच्चा धर्मवीर होता है। शिवाजी महाराज भी सच्चे धर्मवीर थे। छ.शिवाजी को उनकी माता और दादाजी कोंडदेव ने बचपन से ही ऐसी शिक्षा दी थी कि जिससे उनके हृदय में विधर्मी और हिंदु धर्म तथा हिंदु-जाति पर अत्याचार करनेवाले मुसलमानों के प्रति द्वेष और घृणा का भाव निर्माण हो गया था ।

दादाजी कोंडदेव की मृत्यु जब हो गयी, तब मृत्यु के समय उन्होंने छ.शिवाजी को यह उपदेश दिया था कि 'बेटा शिवा, तुम स्वतंत्र होने की चेष्टा बराबर करते रहना। गऊ, ब्राह्मण और देव-मंदिरों की रक्षा का भार तुम्हीं पर है। मुझे विश्वास है तुम बड़े-बड़े अद्भुत कार्य करोगे और संसार में बड़ा यश पाओगे।'[१४]

इसके अलावा छ.शिवाजी को बचपन से ही रामायण और महाभारत की कथाएँ सुनने का बड़ा शौक था। इन्हीं कथाओं का उन पर यह प्रभाव पड़ा था कि यवनों से लड़कर उनके अत्याचारों से हिंदु धर्म और जाति का उध्दार करने की उन पर धुन सवार हो गयी थी। छ.शिवाजी अपने धर्म के कट्टर अनुयायी थे और इसी कारण यवनों के अत्याचार से अपने धर्म की रक्षा करने का काम उन्होंने अपने जीवन का प्रधान लक्ष्य बनाया था।

दादाजी की अंतिम इच्छा को पूर्ण करने का उद्योग उन्होंने जोर-शोर से करना शुरू कर दिया था। छ.शिवाजी ने रामदासजी से ही प्रेरणा लेकर इस काम का प्रारंभ किया, क्योंकि वह समय ऐसा था कि हिंदुओं का धर्म, उनकी इज्जत, उनका धन और उनके प्राण सुरक्षित नहीं थे। विदेशी इस्लाम संस्कृति के बर्बर आक्रमण के कारण भारतीय संस्कृति संकटग्रस्त बन गयी थी। तअस्सुबी मुसलमानों और मजहबी दीवाने मुल्लों का दौरदौरा था। हिंदुओं का धर्म और धन उनकी मुट्ठी में था। गऊ, ब्राह्मण, देवता आदि पर अकथनीय अत्याचार हो रहे थे। हिंदुओं की शक्ति कुचली जा रही थी।'[१५]

इसी समय छ.शिवाजी विदेशी इस्लामों से विष के घूँट कैसे पी सकते ? वे विदेशी शक्तियों के विरुध्द खडे होकर हिंदु-धर्म की रक्षा करने के लिए मैदान में डट गए। धर्म का पालन करनेवाले महाराज शिवाजी के धर्मवीर होने के बारे में कवि भूषण ने ' शिवा-बावनी ' में अनेक छंदों में उल्लेख किया है। छ.शिवाजी महाराज की धर्मवीरता का वर्णन करने के लिए दो विभाग किये जाते हैं --

(१) पराक्रम वर्णन (२) तलवार वर्णन ।

(१) पराक्रम - वर्णन --

पद क्र.१९ में भूषण ने औरंगजेब के पूर्वज बाबर,हुमायूँ और अकबर की प्रशंसा की है। और बतलाया है कि बाबर,हुमायूँ और अकबर ने तो भारत में हिंदु और मुसलमान तथा वेद एवं कुराण की सीमाएँ निश्चित की थी। और कोयी किसी के धर्म पर कभी आघात नहीं करता था। इन सभी शासकों का शासन अत्यंत स्नेहपूर्ण था। उनके मन में हिंदुओं के प्रति आदर का भाव था, परंतु जैसे ही औरंगजेब दिल्ली का सम्राट हुआ और उसने आलमगीर की उपाधि ग्रहण की वैसे ही उसके हृदय में क्रूरता, कट्टरता,दुष्टता एवं कटुता आयी। वह अपने पूर्वजों के यश को भूल गया। वह हिंदुओं पर मनमाने अत्याचार करने लगा। देव-मंदिरों को गिराकर सर्वत्र इस्लाम धर्म का प्रचार कठोरता के साथ करने लगा।

पद क्र.१९ में बताया है कि औरंगजेब धर्म के मामले में बडा कट्टर था। उसकी नीति यह थी कि हिंदुओं के अधिकार मुसलमानों से इतने कम कर दिए जाएँ, और हिंदु के नाते रहना इतना महँगा बना दिया जाय कि वह लाचार होकर मुसलमान बन जाय। इसप्रकार थोडे ही समय में सारे हिंदुस्थान के निवासी मुसलमान हो जायेंगे। इसी भावना के अनुसार औरंगजेब ने मंदिरों का ध्वंस करवाया और जजिया कर लगाया।

औरंगजेब ने न केवल हिंदुओं को मुसलमान बनने पर मजबूर किया, बल्कि साथ-साथ उनके पवित्र धर्मस्थान मंदिरों को भूमिसात भी कर दिया। लाखों हिंदु

जबरदस्ती से मुसलमान बना लिए गये । उसकी हिंदुओं के मंदिरों पर कुदृष्टि पडी थी, इसलिए उसने सभी मंदिरों का ध्वंस करके वहाँ मस्जिदें खडी की। काशी के विश्वनाथजी, मथुरा के केशवरायजी, गोकुल के गोपालजी और नगरकोट के देवी का देहरा आदि मंदिरों को गिराकर वहाँ मसजिदें खडी कीं। देव-मंदिरों को गिराकर वह सर्वत्र इस्लाम धर्म का प्रचार कठोरता के साथ कर रहा था।

इस समय भारत के सभी राजा, राव और राणा छिप गये थे। वे तनिक भी उसके विरुध्द आवाज नहीं उठा सकते थे। उसने गौरी-गणपति के देवस्थानों को भी उजाड दिया था। वह संपूर्ण भारत में सिध्द एवं महात्माओं का विनाश करके सर्वत्र पीर और पैंगबरों की वृध्दि कर रहा था। औरंगजेब का प्रताप देखकर पार्वती और गणेश आदि देवता अपने-अपने स्थान पर चुप्पी साधकर बैठ गये थे। सभी ओर मुसलमानी धर्म का बोलबाला था। कोयी हिंदू साधु-संत नजर नहीं आता था। सब मुसलमान फकीर ही फकीर दिखायी पडते थे।[१६]

ऐसे विस्फोटजनक वातावरण में छ.शिवाजी महाराज का अभ्युदय हुआ। वे हिंदुत्व की मर्यादा के रक्षक थे। पद क्र.२० में कहा है कि कुंभकर्ण के समान भयंकर औरंगजेब ने धरती पर जन्म लेकर मथुरा नगरी जलाकर राख कर दी थी, और वहाँ बलपूर्वक इस्लाम का प्रचार किया था। उसने अनेक देवी-देवताओं के मंदिरों को तोडा, जिन्हें देखकर हिंदुओं के हाथ से माला छूट जाती थी। काशीपति विश्वनाथ पंडों के आश्रय में भाग गये थे। और हिंदुओं के चतुर्वर्ण मन ही मन भयभीत हो गये थे।[१७] स्वयं महादेव भी अपनी गति को भूल गये थे, तो और लोग किस गिनती में। यदि ऐसे अवसर पर छ.शिवाजी महाराज न होते तो औरंगजेब सभी हिंदुओं की सुन्नत करवा देता, अर्थात उन्हें मुसलमान बनाकर ही छोडता।[१८]

छ.शिवाजी महाराज ने इन सब की रक्षा अपनी तलवार से की। बडे उत्साह और युध्दोन्माद से उन्होंने अपने धर्म की रक्षा की थी। उस समय दिल्ली के अनेक वीरों ने उनका बाल भी बाँका नहीं किया। विजय-लक्ष्मी ने उनके गले में जयमाला डाल दी थी। इसप्रकार धर्मवीर छ.शिवाजी के पराक्रम का वर्णन कवि ने किया है।

(२) <u>तलवार वर्णन</u> --

धर्मवीर शिवाजी की तलवार ने ही हिंदुत्व को बचाया था, और उनके तिलक की भी रक्षा की थी। छ. शिवाजी ने हिंदुओं को मुसलमान होने से बचा लिया था। उसी के साथ स्मृति, पुराण और वेदों को प्राण दिया था। वेदों और पुराणों का पठन फिर से शुरू हुआ और राम नाम घर-घर में सुनायी देने लगा।[१९]

इसप्रकार अन्य राजाओं की राजधानी भी छ.शिवाजी ने बचायी थी। उन्होंने पृथ्वी में धर्म की और गुणियों में गुण की रक्षा की थी। मराठों की सीमाओं को विजय करने के कारण ही छ.शिवाजी महाराज का यशोगान और कीर्ति का वर्णन हो रहा है। उन्होंने तलवार से ही दिल्ली की सेना को पराजित करके इस संसार की मर्यादा रखी है (पद क्र.५०)।

कवि भूषण ने धर्मवीर शिवाजी की प्रशंसा की है, क्योंकि वे धर्म ग्रंथों देवी-देवताओं, देव-मंदिरों आदि की सुरक्षा करने के लिए प्रयत्नशील थे। जो हिंदू धर्म का विनाश कर रहे थे,ऐसे मुस्लिम शासकों का उन्होंने दमन किया। इससे छ.शिवाजी की धार्मिक - भाव संबंधी राष्ट्रीय भावना स्पष्ट होती है।

छ.शिवाजी ने सुप्रसिध्द वेद और पुराणों की रक्षा की थी और हिंदुओं की चोटी सुरक्षित रखी थी। उनके कंधे पर जनेऊ और गले में माला सुरक्षित रखी थी। उन्होंने अपनी तलवार के बल पर ही देवता, देव-मंदिर एवं स्वधर्म की रक्षा की थी।[२०]

३) <u>दयावीर</u> --

जिस वीर के मन में दुर्बल व्यक्ति और उसकी पीडा या दु:ख के प्रति दया निर्माण होती है और उसकी पीडा या दु:ख मिटाने का जो वीर आश्वासन देकर उसकी पीडा हमेशा के लिए मिटाता है, वही वीर सच्चा दयावीर बन जाता है।[२१] छ.शिवाजी महाराज भी दयावीर थे। वे भी अपनी प्रजा की पीडा

या दु:ख को जानकर उसे हमेशा के लिए दु:खहीन कर देते थे। वे हमेशा प्रजा के सुख की ओर ही ध्यान देते थे।

कवि भूषण कहते हैं कि छ.शिवाजी महाराज दीन-दयालु हैं और इस संसार के प्रतिपालक हैं। वे इस पृथ्वी को म्लेंच्छहीन करके उसका उध्दार करना चाहते थे। जिसप्रकार ईश्वर पृथ्वी का और सभी मानव-प्राणियों का उध्दार करता है, उसप्रकार छ.शिवाजी ने दया से मानव-धर्म और इस संसार का उध्दार किया। छ.शिवाजी ने मनुष्य का रूप धारण करके जो कार्य किये थे वे सब हरि के ही कार्य थे। जिसप्रकार ईश्वर ज्ञानी और गुणी ऐसे धीर पुरुषों पर अनुग्रह करता है, उसी प्रकार छ.शिवाजी महाराज भी अवगुणों से रहित ऐसे गुणी लोगों पर ही अनुग्रह करते थे।[२२]

औरंगजेब जैसा क्रूर बादशाह शरणागत को नीति के अनुसार छोड देना चाहिए पर उन्हें नहीं छोडता था, लेकिन छ.शिवाजी महाराज औरंगजेब के वजीरों को भी अपनी प्रजा बनाकर दया से ही छोड देते थे। अगर छ.शिवाजी की शरण में शत्रु आ जाता तो वे उसका गुण देखकर उस पर दया करके उसे अपनी सेना में मिलाकर अभयदान देते थे। इसी प्रकार छ.शिवाजी महाराज की दयावीरता के अनेक पद कवि ने ' शिवा-बावनी ' में दिए हैं।

छ.शिवाजी के काल में वेदों की मान्यताओंपर कुठाराघात हो रहा था। वेदों की रक्षा न होने से वेदों में आस्था रखनेवाले लोग दु:खी हो गये थे। औरंगजेब के धर्मविरोधी अत्याचार से जनता पीडित थी। उन्हें अपने पूज्य धर्मग्रंथ और वेदों का अनुगमन करना कठिन हो गया था (पद क्र.२०)

वेदों की रक्षा करने के लिए औरंगजेब के अत्याचार को रोकना आवश्यक था, इसलिए छ.शिवाजी महाराज ने औरंगजेब के विरुध्द आवाज उठायी। पीडित जनता को देखकर उनके मन में करुणा निर्माण हुई और उत्तेजित होकर उन्होंने अपनी वीरता से वेदों की रक्षा करके खोयी हुई प्रतिष्ठा फिर से स्थापित करा दी। इसके बाद वेदों से संबंधित संस्कारों को प्रोत्साहन मिला। उन्होंने हिंदु धर्म

के खोये हुए मूल्यों को भी प्रतिष्ठित करा दिया, और सब लोगों को रोटी की भी व्यवस्था की । ये सब कार्य उन्होंने दया भाव से ही किये थे ।

सामान्य जनता की तरह अन्य राजा लोग भी औरंगजेब के अत्याचार से दु:खी थे । उनका स्वाभिमान और मर्यादा मुगलों ने छीन ली थी, इसलिए उनके प्रति भी छ.शिवाजी के मन में दया उत्पन्न हुयी । उन्होंने अपनी तलवार के बल से राजाओं के स्वाभिमान की रक्षा की थी । सारे शत्रुओं को मारकर उन्होंने अपने हाथ में वरदान देने का अधिकार रखा । उनकी शरण में जो शत्रु आया उसकी रक्षा की । उनकी श्रध्दा सामान्य जनता,राजा और देवताओं में थी, इसलिए देवताओं की मंदिरों में सुरक्षा हुयी और घर घर में लोगों के धर्म की सुरक्षा हुयी । निश्चिंतता से रामनाम का जप भी शुरू हो गया । (पद क्र.५१)

छ.शिवाजी के मन में हिंदु धर्म के प्रति और हिंदु जनता के प्रति सच्चा प्यार था, इसलिए उन्हें सुरक्षित रखने के लिए उन्होंने अपनी वीरता से अनेक शत्रुओं को मार डाला । मुसलमानों को अपने पंजे के बल से उन्होंने मसल दिया था, परंतु जिसने दीनता दिखायी उसे छ.शिवाजी ने दया दिखाकर छोड दिया । पद क्र.३९ में लिखा है कि रणक्षेत्र में औरंगजेब के भाग जानेपर छ.शिवाजी महाराज उसके वीरों को पकड कर मामुली प्रजा बनाकर दया भाव से छोड देते थे । इसप्रकार कवि भूषण ने छ.शिवाजी महाराज की दयावीरता का वर्णन किया है ।

दयावीर की तरह छ.शिवाजी महाराज दानवीर भी थे, लेकिन दानवीर के बारे में 'शिवा-बावनी' में एक भी पद नहीं दिखायी देता । इसका मतलब यह नहीं है कि छ.शिवाजी दानी नहीं थे, वे तो महादानी थे । उनके दान के संबंध में भूषण ने दूसरे ग्रंथ में अनेक छंद लिखे हैं । 'शिवा-बावनी' ग्रंथ सिर्फ ५२ छंदों का है । इतने छोटे ग्रंथ में छ.शिवाजी महाराज का संपूर्ण चरित्र नहीं समा सकता । इसलिए भूषण ने छ.शिवाजी के दानवीर के बारे में 'शिवा-बावनी' में उल्लेख नहीं किया है । उन्होंने 'शिवराज भूषण' इस ग्रंथ में दानी शिवाजी के अनेक छंद लिखे हैं । फुटकर छंदों में भी दानवीर का वर्णन किया है ।

भूषण ने छ.शिवाजी के दान देने के रूप में जो वर्णन किया है, उसमें उनको पूर्ण सफलता मिली है।

४) दानवीर --

जो राजा याचक को उसकी इच्छा से अधिक दान देकर उसे संतुष्ट करता है, उसका दारिद्र्य नष्ट करता है, वही राजा दानवीर होता है। इच्छा से अधिक दान मिलने से याचक को हर्ष होता है। और हर्ष की तरह उसे धैर्य भी मिलता है। छ.शिवाजी महाराज भी ऐसे ही दानवीर थे कि जिससे वे याचक की इच्छा से अधिक दान देकर उसे संतुष्ट करते थे और उसका दारिद्र्य हमेशा के लिए दूर करते थे। उनका दारिद्र्य नष्ट होने के कारण उन्हें सुखपूर्वक जीने के लिए धीरज आता था और वे हर्ष से सुखपूर्वक जीवन बिताते थे। इससे छ.शिवाजी महाराज को मुक्ति प्राप्ति जैसा आनंद मिलता था। लोकप्रिय हिंदी कवि रामावतार त्यागी ने अपनी एक कविता में लिखा है कि ---

'प्यासे अधरों को बिन परसे
पुण्य नहीं मिलता पानी को,
याचक का आशिष लिए बिन
स्वर्ग नहीं मिलता दानी को।'

इसका मतलब यह है कि जिसप्रकार पानी को प्यासे अधरों की प्यास बुझाए बगैर पुण्य नहीं मिलता उसी प्रकार दानी को याचक को दान देकर उसका आशिष लिए बगैर मुक्ति नहीं मिलती, इसलिए छ.शिवाजी महाराज याचक को उसकी इच्छा से अधिक दान देकर, उसका आशिष लेकर मुक्ति-प्राप्ति जैसा आनंद पाते थे।

कवि भूषण ने छ.शिवाजी के पिता के शौर्य और दानी होने का वर्णन करके यह संकेत दिया है कि पिता के इन गुणों को ही उनके पुत्र छ. शिवाजी ने अपनाया था।[23] छ.शिवाजी महाराज कर्ण के समान उदार-हृदय से दान देते थे, इसलिए वे कर्ण के समान दानवीर थे।

छ.शिवाजी दान देते वक्त राजा हरिश्चंद्र के समान अपना राज्य तक दे देते थे। ऐसा कहा जाता है कि छ.शिवाजी महाराज अपने गुरु श्री समर्थ रामदास स्वामी को अपने राज्य से भी बढ़कर मानते थे। एक दिन उन्होंने अपना सारा राज्य गुरु को भिक्षा के रूप में लिखकर दान में दिया था। जब समर्थ को यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने उसे छ.शिवाजी को लौटाते हुए कर्तव्य पालन का उपदेश दिया था। राज्य भी दान में देकर छ.शिवाजी ने अपनी दानवीरता का परिचय दिया है।

इतना बड़ा महादानी दुनिया में छ.शिवाजी के सिवा और कोयी राजा नहीं था। अन्य राजा पाँच-दस रुपये दान देकर स्वयं को उदार कहलाते थे। (शिवराज भूषण छ.सं.१७७) छ. शिवाजी माँगनेवालों के माँगने के पहले ही उनका मनोरथ पूरा कर देते थे, इसलिए कवि उनको दानियों के बादशाह कहते थे। उनका हृदय रत्नाकर जैसा विशाल और दयाभाव से सम्पृक्त था। उनका हाथ कल्पवृक्ष जैसा और कल्पवृक्ष उनके हाथ जैसा था।[२४] वे सबके चित्त की कामना पूर्ण करते थे, इसलिए उनके हाथ को कल्पवृक्ष कहा है।

सरजा शिवाजी में सुंदरता, गौरव, प्रभुता, सज्जनता, दयालुता, दीनता और प्रजा के प्रति कोमलता झलकती थी। दान देते समय माँगने पर तलवार तक दे देना, दीनों को अभयवर देना, बादशाहों से युध्द करने का संकल्प और विवेक इ. अकेले शिवाजी में इतने सारे गुण थे।[२५]

छ.शिवाजी के दान के यश की चाँदनी पृथ्वी पर चारों ओर छा गयी थी। राजा शिवाजी का द्वार भिक्षुकों को सदा भाता था। शिवाजी इस संसार में महादानी थे। उनके पास चाँदी की इच्छा करने पर सोना और घोड़े की इच्छा करने पर हाथी मिल जाता था। (शिवराज भूषण छंद क्र.२११) छ. शिवाजी सभी सत्पात्रों को दान देते थे। वे कवियों को ऐसे हाथी देते थे कि जिन्हें पाकर वे निश्चित हो जाते थे। वे कवियों के दरिद्रतारूपी महान हाथी को नष्ट कर देते थे, इसलिए उन्हें कवि संसार सरजा सिंह कहते थे।[२६]

छ.शिवाजी की प्रसन्नता से पल भर में भिखारी भी राजा हो जाता था। महादानी छ.शिवाजी की संसार में प्रसिध्द दान की महिमा सुनकर सब लोग तप

कर-करके विष्णु से ऐसी अभिलाषा कर यह वर माँगते थे कि अगले जन्म में आप हमें छ.शिवाजी महाराज का भिखारी बनाइए ।[२७]

दान देते समय ब्राह्मण को देखकर सुमेरु पर्वत तथा कुबेर की भी संपत्ति देने के लिए छ.शिवाजी का हृदय लालायित हो उठता था । (शिवराज भूषण छं. सं.३२४) छ.शिवाजी बिना गर्व के दान देते थे, इसलिए कवि कहते हैं कि शिवाजी के हाथ से दान की शोभा बढ़ती है और दान से उनका हाथ सुशोभित होता है ।

कवि भूषण के अनुसार शंकर की कृपा से छ.शिवाजी की बुध्दि बढ़ी, सुबुध्दि से दान बढ़ा, दान से पुण्य बढ़ा, पुण्य से शिवाजी बढ़े और शिवाजी से संसार की भलाई बढ़ी । (शिवराज भूषण छ.सं.२१५)

Ref जिसप्रकार श्रीमद्भगवद्गीता में बताया है कि ज्ञानी पुरुष स्वभाव से ही निर्गुण तथा सगुण दोनों को समान भाव से चाहता है, अथवा ज्ञानी पुरुष गाय, कुत्ता, हाथी, ब्राह्मण, क्रूर आदमी इन सब की ओर समानता की दृष्टि से देखता है, उसी प्रकार छ.शिवाजी महाराज भी गुणहीन अथवा गुणवान सभी व्यक्तियों को दान देकर, उन्हें संतुष्ट करते थे और स्वयं वे मुक्ति का आनंद लेना चाहते थे ।

निष्कर्ष ----

छ.शिवाजी महाराज की वीरता को चार भागों में विभाजित किया है, क्योंकि वीर चार प्रकार के होते हैं -- (१) युध्दवीर (२) धर्मवीर (३) दानवीर और (४) दयावीर। छ.शिवाजी की वीरता में उदारता की भावना थी। उन्होंने जो कार्य किए उसके पीछे उनकी उदारता की भावना थी। ऐसे महत्कार्य करनेवाले छ.शिवाजी के सभी प्रकार के उत्साहों का निरूपण करते हुए भूषण ने उनकी वीरता की अत्यधिक मार्मिक अभिव्यंजना की है।

कवि भूषण ने पौराणिक उदाहरण देकर छ.शिवाजी के अद्वितीय शौर्य, अनुपम पराक्रम एवं असाधारण तेज का निरूपण किया है। छ.शिवाजी में महाभारत युग की वीरता के गुण मिलते हैं, इसलिए वे भारत की प्राचीन संस्कृति के समर्थक और रक्षक कहे जाते हैं।

छ.शिवाजी के पराक्रम और रणकौशल का वर्णन भूषण ने अत्यंत ओजस्वी रूप में किया है। उनके साहस का वर्णन तो बहुत अच्छी तरह से किया है। रणप्रस्थान के लिए जाते वक्त छ.शिवाजी के नगाडे की आवाज सुनकर उनके सैनिक बडे उत्साह से सेना में शामिल होते थे।

कविने छ.शिवाजी का ऐसा वर्णन किया है कि उसे पढकर या सुनकर डरपोक लोगों का भी हृदय उत्साह से भर जाता है। छ.शिवाजी की चतुरंगिनी सेना को देखकर और उनके नगाडे की आवाज सुनकर शत्रुओं की स्थिति बहुत ही दयनीय हो जाती थी। शत्रु-स्त्रियाँ भय से काँप उठती थीं। जब छ.शिवाजी क्रोधित होकर किसी के साथ युध्द करते थे, तब महादेवजी का सारा समाज रुधिर और मांस मिलने की आशा से आनंदोत्सव मनाता था। कवि भूषण ने छ. शिवाजी के रण-वर्णन में चण्डी और भूत-प्रेतों का भी वर्णन किया है।

युध्द-क्षेत्र में छ.शिवाजी की तलवार सर्पिणी की तरह तीव्र गति से चलकर शत्रुओं की लाशों के ढेर लगाती थी। उनकी वीरता के कारण उनका आतंक चारों

और फैल गया था । छ.शिवाजी के डर के कारण दिल्ली में भूचाल होता था । उन्होंने सब किले शत्रुओं से छीन लेकर अपनी सीमा बढ़ाई थी । और मुगल बादशाहों से बराबरी की थी ।

बड़े-बड़े शत्रु छ.शिवाजी से आतंकित होने के कारण युध्द में शिवाजी उन्हें साधारण जनता की तरह पकड़कर दंडित करते थे, या उन्हें कारागृह में डाल देते थे । वे अपनी जनता को सुखपूर्वक रहने का मौका देते थे । वे प्रजावत्सल राजा थे । छ.शिवाजी जनता का सुख अपना सुख मानते थे । यवनों से जनता की स्वतंत्रता और उनके सुख की रक्षा करने के लिए वे निरंतर प्रयत्नशील रहते थे ।

छ.शिवाजी महाराज दानवीर भी थे । उनका द्वार भिक्षुकों के लिए हमेशा खुला था । उनके द्वार पर भिक्षुकों की भीड़ हमेशा होती थी । वे करोड़ों रुपये, कीमती वस्त्र,जवाहर,सोने की मुहरें दान में देते थे । कोयी याचक दान लिए बगैर नहीं जा सकता था । वे याचक को माँगने से पहले और इच्छा से अधिक दान देकर संतुष्ट करते थे । छ. शिवाजी के सेवक भी कुबेर के समान जान पड़ते थे । वे सत्पात्र दान देते थे । उनकी प्रसन्नता से एक पल में भिक्षुक भी राजा बनता था ।

छ.शिवाजी धर्मवीर थे । उन्होंने प्राणों से भी प्रिय भारतीयों के वेद और पुराणों की रक्षा की थी । हिंदुओं के मुखों में उन्होंने राम नाम सुरक्षित रखा था । उन्होंने उनकी चोटी बचायी थी और रोटी की भी सुरक्षा की थी । ब्राह्मण पुरोहितों के गले में जनेऊ और माला सुरक्षित रखी थी । महाराज शिवाजी ने अपनी तलवार के बल पर प्रबल मुगलों,पातशाहों ,बैरियों को दबा कर नष्ट कर दिया और अपने देश, देवता और स्वधर्म को सुरक्षित रखा ।

जिसप्रकार ईश्वर पृथ्वी का और सभी मानव-प्राणियों का उध्दार करता है, उसी प्रकार छ.शिवाजी ने दया भाव से मानव धर्म और इस संसार का उध्दार किया है । उन्होंने हिंदु धर्म के खोये हुए मूल्यों को प्रतिष्ठित किया । इसप्रकार छ.शिवाजी महाराज ने ही हिंदु जनता की लाज बचायी ।

संदर्भ सूची

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठ क्र.	प्रकाशक । प्रकाशन संस्करण
१	भूषण और उनका साहित्य	डॉ.राजमल बोरा	१७२	साहित्य रत्नालय,३७ । ५०, गिलीस बाजार,कानपुर । द्वि.सं.१९८७
२	महाकवि भूषण कृत	प्रताप नारायण टंडन	१८	विद्यामंदिर,रानीकटारा, लखनऊ । सं.सितंबर,१९५४
३	शिवा-बावनी (विशद भूमिका, शब्दार्थ,पद्यार्थ सहित)	श्री देवचंद्र विशारद	५४	हिंदी भवन,जालंधर और इलाहाबाद । १९६९
४	- वही -(पद क्र.३)		५६	-वही-
५	हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि	डॉ.द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	३९३	विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा । षष्ठ सं.१९७९
६	शिवा-बावनी (विशद भूमिका, शब्दार्थ ,पद्यार्थ सहित) पद क्र.६	श्री देवचंद्र विशारद	५९	हिंदी भवन,जालंधर और इलाहाबाद । १९६९
७	- वही - पद क्र.८	- वही -	६१	- वही -
८	- वही - पद क्र.२३	- वही -	७३	- वही -
९	भूषण और साहित्य	डॉ.राजमल बोरा	११७	साहित्य रत्नालय ३७ । ५० गिलीस बाजार,कानपुर । द्वि.सं. १९८७

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठ क्र.	प्रकाशक । प्रकाशन संस्करण
१०	शिवा-बावनी (विशद भूमिका, शब्दार्थ ,पद्यार्थ सहित)	श्री देवचंद विशारद	७४	हिंदी भवन,जालंधर और इलाहाबाद । १९६९
११	- वही -(पद क्र.४८)	- वही -	९४	- वही -
१२	- वही -(पद क्र.४२)	वही	८९	- वही -
१३	वही (पद क्र.३९)	वही	८७	वही
१४	महाकवि भूषण रचित शिव-भूषण	महाकवि भूषण	२४	किताबघर,मेनरोड,गांधीनगर दिल्ली,११००३१ नवंबर १९८२
१५	- वही -	- वही -	६	- वही -
१६	शिवा-बावनी (विशद भूमिका, शब्दार्थ,पद्यार्थ सहित) पद क्र.१८	श्री देवचंद्र विशारद	६९	हिंदी भवन,जालंधर और इलाहा- - बाद । १९६९
१७	भूषण (साहित्यक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन)	डॉ.भगवानदास तिवारी	२६७	साहित्य भवन(प्रा.)लि., इलाहाबाद-३ प्रथम सं. १४ नवंबर १९७२
१८	शिवा-बावनी (विशद भूमिका, शब्दार्थ ,पद्यार्थ सहित),पद क्र.२०	श्री देवचंद्र विशारद	७१	हिंदी भवन,जालंधर और इलाहाबाद । १९६९
१९	भूषण और उनका साहित्य	डॉ.राजमल बोरा	२५	साहित्य रत्नालय,३७।५०, गिलीस बाजार,कानपुर द्वि.सं.१९८७

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठ क्र.	प्रकाशक । प्रकाशन संस्करण
२०	हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि	डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना	३९१	विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा । षष्ठ सं. १९७९
२१	महाकवि भूषणकृत शिवराज - भूषण	प्रताप नारायण टंडन	१८	विद्यामंदिर, रानीकटारा लखनऊ । सितंबर १९५४
२२	महाकवि भूषण रचित शिवराज भूषण	महाकवि भूषण	७७	किताबघर, मेनरोड, गांधीनगर, दिल्ली ११००३१ नवंबर १९८२
२३	महाकवि भूषणकृत शिवराज भूषण	प्रताप नारायण टंडन	२	विद्यामंदिर, रानीकटारा लखनऊ । सितंबर १९५४
२४	शिवराज भूषण	महाकवि भूषण	५०	किताबघर, मेनरोड, गांधीनगर, दिल्ली ११००३१ नवंबर १९८२
२५	वही	वही	११३	वही
२६	शिवराज-भूषण	प्रताप नारायण टंडन	५५	विद्यामंदिर, रानीकटारा लखनऊ. सितंबर १९५४
२७	शिवराज भूषण छं.क्र.२७०	प्रताप नारायण टंडन	४५	विद्यामंदिर, रानीकटारा लखनऊ, सितंबर १९५४

••

ई) लोकसंग्राहकता --

लोकसंग्राहकता याने ऐसे व्यक्तियों का संग्रह करना कि जो अवगुणों से रहित हो। अर्थात सज्जनता, दयालुता, प्रामाणिकता, चपलता, सतर्कता, वीरता, दूरदर्शिता और शौर्य-प्रेरक व्यक्तिमत्व जिन व्यक्तियों में है, ऐसे व्यक्तियों को इकट्ठा करना। एकचित्त और स्वामिभक्त लोगों का संग्रह करना याने लोकसंग्राहकता। छ. शिवाजी महाराज का यही गुण सबसे महत्वपूर्ण ऐसा गुण है, क्योंकि उन्होंने इसी गुण के आधारपर अपनी सेना तैयार की थी।

छ.शिवाजी पौराणिक कथाओं से और गुरु समर्थ रामदास से प्रेरणा लेकर हिंदु जाति का उध्दार करने के लिए तैयार हुए, लेकिन उनके पास सेना नहीं थी। सेना तैयार करने के लिए वे पहाडों और जंगलों में अकेले घूमा करते थे। इससे उन्हें दुर्गम मार्गों की जानकारी मिली। यवनों से तंग आकर अपने प्रदेश में डाके डालनेवाले पहाडी डाकुओं से वे परिचित हुए। उन्होंने सब डाकुओं को अपनी सेना में शामिल कर लिया। साथ ही डाकुओं के सरदार और मावलों को एकत्र कर उन्होंने एक अच्छी सेना तैयार कर ली थी। [१]

इसप्रकार छ.शिवाजी की शक्ति तो बढी, लेकिन आत्मरक्षा के लिए उनके पास कोई किला नहीं था, इसलिए उन्होंने मावलों की मदद से तोरण का किला लेकर किलेदार को भी अपनी सेना में मिला लिया। उस किले में उन्हें सौभाग्य से एक खजाना भी मिला, जिससे उन्होंने अपनी सेना और भी बढा ली।

इसप्रकार छ.शिवाजी ने अनेक किले जीत लिए, और उन किलों के किलेदारों को अपनी सेना में मिलाकर उन्हें सम्मानित करके उच्च पद दे दिये। रोहिडा किला लेतेवक्त किलेदार तो मर गया, लेकिन उसका मंत्री बाजीप्रभु देशपांडे लडता रहा। छ.शिवाजी ने उसे समझाया, तब उसनेआत्मसमर्पण कर दिया। छ. शिवाजी ने उसे अपनी सेना का सेनापति बना दिया। [२]

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR
BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

छ.शिवाजी महाराज अपनी प्रभावशालिनी और हृदयस्पर्शी वाणी से अपने सहयोगियों को समझाकर अपनी सेना में मिलाते थे। उनके पास इतने प्रामाणिक और साहसी वीर थे कि अमावस्या की अँधेरी रात में भी शत्रु के किलों पर आक्रमण करते थे। छ. शिवाजी की आज्ञा पाते ही उनके वीर कोई भी कठिन काम हो उसे करने के लिए तैयार होते थे।

भूषण ने पद क्र.१ में बताया है कि छ.शिवाजी ने अपनी चतुरंगिनी सेना में पैदल, ऊँट, घोडे और हाथी सवारों को भी रखा था। उन्होंने जहाजी बेडा भी तैयार करवाया था। अपनी जलसेना की सहायता से वे अंग्रेज, डच, पोर्तुगीज और फ्रांन्सीसियों पर आक्रमण करते थे। अंग्रेज उनकी चतुरंगिनी सेना को उडती हुयी सेना कहते थे।[3]

छ.शिवाजी ने ऐसे लोगों को इकट्ठा किया था कि जो औरंगजेबरूपी महाशत्रु से लडकर परास्त करे। औरंगजेब इतना महान था कि वह छ.शिवाजी को छोड सभी राजा महाराजाओं को अपने शासन चक्र में पिस रहा था। सभी राजा उससे डरकर दुर्ग, बाज आदि भेंट देते थे। वे उसकी नौकरी करके सेवा करते थे। ये सब राजा उसके अधीन थे। (पद क्र.१७) इतना बलाढ्य औरंगजेब होते हुए भी छ.शिवाजी ने उसे अपनी चतुरंगिनी सेना के सहारे नीचा दिखाया था। छ.शिवाजी के सामने उसकी एक भी न चलती थी। इसप्रकार सद्गुणी और वीर पुरुषों को ही उन्होंने इकट्ठा करके अपनी चतुरंगिनी सेना तैयार की थी।

एक शत्रु से भी छ.शिवाजी महाराज किसप्रकार लाभ उठाते थे, इसका उदाहरण पद क्र.२४ में दिया है। सलहेरी किले को जीतने के लिए औरंगजेब ने चुने हुए अनेक सिपह-सालार भेज दिए, तब घमासान युध्द हुआ। छ. शिवाजी की सेना उसके सेनापतियों को खोज खोजकर मार रही थी। कई सेनापतियों को भगाया दिया, कई लोगों को पकड लिया। इस युध्द में मोहकमसिंह, इखलासखान और बहलोल खान जैसे वीरों को पकड लिया गया था और अपनी सेना में मिला लिया था।[4]

छ.शिवाजी मुगल प्रांतों को लूटकर किसप्रकार अपनी सेना बढाते थे, इसका विवेचन पद क्र.२५ में दिया है। सूरत जैसे सधन शहर को उन्होंने दो बार लूटा

था । उस संपत्ति के सहारे उन्होंने अपनी सेना बढाई थी । हिंदुओं की सुरक्षा के लिए उन्होंने मुसलमानों को अपने पंजे के बल पर मसल दिया था । उस समय जिसने दीनता दिखायी उनको पकडकर अपनी सेना में मिला लिया था ।

लोकसंग्रह के लिए छ.शिवाजी कभी कभी अपनी हार भी मानते थे , क्योंकि उनकी सेना छोटी थी और शत्रुसेना बडी थी । एक दिन राजा जसवंतसिंह से सुलह करके उन्होंने अपने ३५ किले वापस दे दिये थे । जसवंतसिंह से उनके युध्द न करने का कारण यह था कि उनकी सेना उसकी सेना से बहुत ही कम थी । युध्द से बहुत मनुष्य हानि का संभव था और छ.शिवाजी तो वीरों का संग्रह कर रहे थे ।

हिंदुओं से हिंदुओं का विनाश करने की बादशाह की चाल को व्यर्थ करने के लिए ही साहसी शिवाजी ने गुप्त रूप से जसवंतसिंह से भेंट की थी । जसवंतसिंह औरंगजेब की ओर से आया था । छ.शिवाजी ने बादशाह की अनीति और हिंदुओं पर अत्याचार करने की चाल अच्छी तरह उसे समझायी । इसपर जसवंतसिंह राजी हो गया ।[5]

छ.शिवाजी तो हिंदुओं से प्यार करते थे, इसलिए औरंगजेब ने हिंदु राजा जसवंतसिंह को छ.शिवाजी के साथ युध्द करने के लिए भेजा था । चतुर शिवाजी ने यह जान लिया था । वे हिंदु की हत्या हिंदु से हो यह नहीं चाहते थे ।

छ.शिवाजी से डरकर जो नजराने भेजते थे, उन्हें भी वे अपनी सेना में मिलाते थे । इसप्रकार छ.शिवाजी ने अच्छे-अच्छे वीरों का संग्रह करके अपनी सेना बढाकर हिंदु राज्य की सीमा इतनी बढाई कि पूर्व से पश्चिम तक और दक्षिण से उत्तर तक के देशों में जहाँ-जहाँ औरंगजेब का राज्य था वहाँ-वहाँ छ.शिवाजी महाराज का ही आधिपत्य हो गया । (पद क्र.३३)

छ.शिवाजी ने अपनी सेना में मुसलमानों को भी बडे-बडे पद दिये थे । उन्होंने एकता स्थापित करने के लिए विविध भाषिक कवि भी अपने दरबार में रखे थे । ऐसे कवि दक्षिण में आकर छ.शिवाजी का गुण-गान करते थे । वे छ.शिवाजी की कृपा से निर्भयता से रहते थे । छ. शिवाजी महाराज शत्रुओं के

लिए अग्नितुल्य और मित्रों के लिए सुधावत् थे। अपने शौर्य और औदार्य के कारण ही वे शूर वीरों के सिरताज बन गये थे। वे गुणों से गुणी लोगों का मन बाँध लेते थे। [६]

कवि भूषण के अनुसार छ.शिवाजी से गुणियों की बढाई होती थी और शिवाजी की बढाई से गुणी लोग शोभित थे। वे गुणियों को दान देकर या पुरस्कृत करके भी अपने यहाँ रख लेते थे। वे लोग निर्भयता से छ.शिवाजी के पास रहते थे। इसप्रकार छ.शिवाजी महाराज ने लोकसंग्रह करके बलवान बनकर हिंदु राज्य की स्थापना की। उनके बल से उनके किलेदार और गढपति गर्व करते थे और छ.शिवाजी उनके बल पर गरजते थे। [७]

निष्कर्ष --

लोकसंग्राहकला के लिए छ.शिवाजी महाराज ने पौराणिक कथाओं और अपने गुरु रामदास से प्रेरणा ली थी। सबसे पहले उन्होंने अपनी सेना में पहाडी डाकुओं को मिला लिया था। उनकी सेना में स्वामिभक्त ,साहसी,शूर और स्वाभिमानी वीर थे। वे लोगों को स्वदेश और स्वधर्म का महत्व बताकर प्रोत्साहित करके अपनी सेना में मिला लेते थे। उनकी सेना में युध्द-कौशल से परिपूर्ण वीर थे। वे आज्ञा का पालन सच्चाई से करते थे। छ. शिवाजी महाराज शत्रु के किलों के किलेदारों को भय दिखाकर या उन्हें समझाकर भी अपनी सेना में मिला लेते थे। ऐसे किलेदारों को और शरणागत वीरों को छ.शिवाजी सम्मानित करके उच्च पद देकर अभयदान भी दिया करते थे।

छ.शिवाजी की सेना में हिंदु और मुसलमान लोग बराबर के पद पर थे। छ.शिवाजी एक हिंदु राजा थे। वे हिंदुओं का खून हिंदु से बहाना नहीं चाहते थे,उनका लक्ष्य सिर्फ लोकसंग्रह करना था। उनके पास गुणीजन स्वच्छंदता से रहते थे। सभी लोक एकचित्त थे। वे सब समान रूप से छ.शिवाजी के गुणों से और प्रेम-रज्जू से बँधे हुए थे। लोग छ.शिवाजी महाराज से इतने एकनिष्ठ थे कि उनके कहने पर जान भी देते थे।

संदर्भ सूची

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठ क्र.	प्रकाशक। प्रकाशन। संस्करण
१	शिवराज-भूषण	महाकवि भूषण	२२	किताबघर,मेन रोड, गांधीनगर दिल्ली ११००३१ प्र.सं.नवंबर - १९८२
२	वही	वही	२६	वही
३	भूषण(साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन)	डॉ.भगवानदास तिवारी	१३४	साहित्य भवन(प्रा.)लि., इलाहाबाद -३, प्र.सं., १४ नवंबर १९७२
४	भूषण और उनका साहित्य	डॉ.राजमल बोरा	११६	साहित्य रत्नालय ,३७ ५० गिलीस बाजार,कानपुर द्वि.सं.१९८७
५	शिवराज-भूषण	महाकवि भूषण	२९	किताबघर,मेनरोड, गांधीनगर - दिल्ली ११००३१, नवंबर १९८२
६	शिवराज भूषण	प्रताप नारायण टंडन	२०	विद्यामंदिर ,रानीकटारा, लखनऊ । प्र.सं.सितंबर, १९५४
७	शिवराज भूषण	प्रताप नारायण टंडन	३५	विद्यामंदिर ,रानीकटारा, लखनऊ । प्र.सं.सितंबर, १९५४

ड) राष्ट्रीयता --

राष्ट्रीय भावना का संबंध किसी एक राष्ट्र से होता है। राष्ट्र का अस्तित्व किसी न किसी भूखंड पर ही होता है। उस निश्चित भूखंड के प्रति अनुराग, श्रध्दा और भक्ति का भाव रखना याने राष्ट्रीयता। राष्ट्रीयता में अहं को छोडकर समस्त जनहित की ओर बढने की भावना रहती है। जनहित के साथ सामूहिकता का भी भाव इसमें रहता है।[१]

राष्ट्रीय भावना में भौगोलिक एकता, भाषासंबंधी एकता, सांस्कृतिक एकता और धार्मिक एकता जैसी विविध बातें आती हैं, जो राष्ट्रीय भावना को पुष्ट बनाने के लिए सहायक हो। देश की राष्ट्रीय भावना राजनीतिक एकता का भाव है, जिनका लक्ष्य सामूहिक उत्थान और कल्याण है। राष्ट्रीयता के लिए समस्त जनता को एक दिशा में सोचना और सर्वसामान्य प्रश्नों का हल खोजना आवश्यक है।

उपर्युक्त विवेचन के अनुसार छ.शिवाजी महाराज ने महाराष्ट्र में अपने हिंदु राष्ट्र की स्थापना की।उसे सर्वोपरि माना, और उसे सबल बनाने के लिए मृत्यु तक वे प्रयत्नशील रहे। उनके प्रयत्नों को सफलता भी मिली। उन्होंने जनता में अपनी जन्मभूमि के प्रति त्याग एवं बलिदान के भाव जाग्रत किये थे। उसके साथ विश्रृंखलित जनों को एक समूह या सेना में संगठित करके राष्ट्र का विरोध करनेवाली पाशविक शक्तियों का दमन करने की प्रेरणा दी थी।

इसप्रकार छ.शिवाजी महाराज में अपनी संस्कृति और स्वदेश के प्रति तीव्र अनुराग की भावना थी। वे अपने राष्ट्र के उत्थान में हमेशा के लिए तल्लीन रहते थे। उनकी राष्ट्रीयता के बारे में अनेक पद कवि भूषण ने 'शिवा-बावनी' में दिये हैं --

छ.शिवाजी महाराज की जिंदगी में सबसे महत्वपूर्ण घटना और पहली विजय अफजलखान वध की थी। उन्होंने शत्रु औरंगजेब के दरबार में याने शत्रु की सीमा में रहते हुए भी शत्रु का विरोध किया था। शाईस्ताखाँ को हरा देने से छ.शिवाजी का आतंक चारों ओर फैल गया था।

छ.शिवाजी ने सब अच्छे-अच्छे किले मुगलों से छीन लिए थे, इससे चिंतित होकर बहादुरखाँ अपने लोगों से छ.शिवाजी से बचने का उपाय पूछता है (पद क्र. २६) उसी तरह दिल्लीश्वर औरंगजेब भी छ.शिवाजी से भयभीत हो गया था। उसे शिवाजीरूपी महाकाल का डर लगा हुआ था। वह दीवारों में भी अपनी आँखें रखता था। छ.शिवाजी ने अनेक वैरियों को मारकर दुर्गम गढ भी जीत लिए थे। औरंगजेब को ऐसा लगता था कि शायद छ.शिवाजी अपना सारा राज्य जीत लेगा, इसलिए वह चिंतित बन गया था।

औरंगजेब का एक सरदार छ.शिवाजी से बचने का उपाय बताता है कि हे दिल्लीश्वर ! आप छ.शिवाजी से मेल कीजिए। (पद क्र.३४)

छ.शिवाजी ने सन १६७२ में बीजापुर के बादशाह अली आदिलशाह के मरने पर पन्हाला और सितारागढ जीत लिए थे। हुबली और कनाडा पर भी धावे मारे थे। उसवक्त ऐसा घनघोर युध्द हुआ की युध्द देखने वालों को लगा मानो महादेवजी तांडव नृत्य करने लगे हों। उन्होंने कर्नाटक के अनेक स्थानों पर विजय प्राप्त करके अनेक किले अपने अधिकार में कर लिये थे। (पद क्र.४३)

इसप्रकार छ.शिवाजी ने अपने हिंदु राज्य का विस्तार किया था। उस वक्त उन्होंने अपने बल और पराक्रम से ही कर्नाटक को वश में किया था। उनकी यही चढाई प्रचंड और प्रभावपूरित हुई थी।

महाराज शिवाजी ने अपनी खोयी हुई सीमा को शत्रुओं से छीन लेने के लिए भयंकर युध्द छेडा था। उन्होंने पातशाही को मार-मारकर धूल में मिला दिया था। उन्होंने अपने पराक्रम द्वारा सबसे युध्द करके अपनी सीमा छीन ली थी। छ.शिवाजी का ऐसा पराक्रम देखकर शत्रु लोगों की शेखी निकल जाती थी और उनकी सारी वीरता भी खो जाती थी। इसप्रकार छ.शिवाजी ने अपनी बहादुरी से अपनी सीमा को शत्रुओं से छीन लिया था (पद क्र.४५)

छ.शिवाजी ने औरंगजेब के सभी वंशजों को मारकर उनकी संपत्ति लूटकर अपने हिंदु-राज्य की प्रतिष्ठा और हद बढायी थी। हिंदु-राज्य की प्रतिष्ठा के

लिए उन्होंने भयंकर युध्द किया था । उस वक्त उन्होंने रणभूमि में शत्रुओं के प्रेतों का ढेर लगाया था । इसप्रकार सब शत्रुओं को मारकर उन्होंने हिंदुओं के देश की हद और मर्यादा बढायी थी । इससे हिंदु प्रजा के मन की पीडा नष्ट हो गयी थी । (पद क्र.४६)

मर्दाने शिवाजी के आतंक से डाढी रखनेवाले तुर्कों और मुसलमानों की छाती सुलग उठती थी और दिल्लीपति औरंगजेब का दिल धक् - धक् करता था । शिकार के समय ` शरज: ` शब्द सुनते ही सिंह के बदले छ.शिवाजी के आगमन की कल्पना से औरंगजेब अचेत हो जाता था । स्वप्न में भी उसे छ.शिवाजी का भय सताता था[2] ।

इसप्रकार छ.शिवाजी महाराज ने सब शत्रुओं को खोज-खोज कर मार दिया, और महादेवजी के सारे समाज को रुधिर और माँस देकर आनंदित करके हिंदु-राज्य की प्रतिष्ठा को बढाया । उन्होंने हिंदु राज्य का विस्तार इतना किया कि पूर्व से पश्चिम तक और दक्षिण से उत्तर तक के देशों में जहाँ जहाँ औरंगजेब का राज्य था, वहाँ-वहाँ अपना आधिपत्य रखा । (पद क्र.३३)

कवि भूषण ने छ.शिवाजी के राष्ट्र रक्षण के लिए किए गये भयंकर युध्दों के दृश्य अंकित करने के लिए पौराणिक पात्रों के संदर्भ देकर बताया है कि महाराज शिवाजी ही एक ऐसे राजा थे कि जो अत्याचारी मुगलों का नाश करनेवाले थे । उन्होंने अपनी चतुरंगिनी सेना के सहारे मुगलों की चतुरंगिनी सेना को नष्ट कर दिया । (पद क्र.३६)

जिसप्रकार अर्जुन,राम,कृष्ण ,इंद्र, भीम,महादेव आदि पौराणिक वीरों ने अपने शत्रु को मारकर अपनी जनता को सुखी बनाया था; उसी प्रकार छ.शिवाजीने अपने सभी शत्रुओं को मारकर अपनी जनता को सुखी बनाकर अपनी सीमा भी बढायी थी । इसलिए कवि उन्हें गणेश की तरह विघ्नहर्ता कहते हैं । गणेशजी जिसप्रकार अपने भक्तों के विघ्नों का नाश करते हैं,उसीप्रकार छ.शिवाजी महाराज ने भी अपनी जनता के दु:ख, पीडा,और दारिद्र्य को मिटाकर सुखी बनाया था । इसतरह बीजापुर,गोलकुंडा और दिल्लीश्वर बादशाह औरंगजेब को छ. शिवाजी महाराज ने अपने प्रबल पराक्रम ,चातुरी और साहस से परास्त करके अपने हिंदु-राज्य

की सीमा दिल्ली दरबार से अलग बाँधकर मुगल बादशाहों से बराबरी की थी।[3]

छ.शिवाजी महाराज के मन में मथुरा, वृंदावन और बनारस के हिंदु - संस्कृति के प्रेरणा स्थलों - तीर्थ स्थानों की रक्षा की भावना थी, --

` काँसी हूं की कला गई, मथुरा मसीत भई
सिवाजी न होतो तो सुनति होती सबकी। ` पद क्र.१८

औरंगजेब हिंदुओं पर मनमाने अत्याचार कर रहा था। हिंदुओं के देवमंदिरों को गिराकर वहाँ मस्जिदें खडी कर रहा था हिंदुओं को वह जबरदस्ती मुसलमान कर रहा था इसी समय छ.शिवाजी ने औरंगजेब बादशाह को मरोड डाला और हिंदुओं को मुसलमान होने से बचाया। इसके बाद मंदिरों में देवताओं की सुरक्षा हुयी और घर-घर में लोगों का धर्म सुरक्षित रहा। चारों ओर राम-नाम का जप शुरू हो गया। इसप्रकार छ.शिवाजी ने हिंदुओं के तीर्थस्थानों और संस्कृति की रक्षा की थी। धर्म का संबंध राष्ट्रीयता से होने के कारण ही उन्होंने धर्म की सुरक्षा का जिम्मा अपने ऊपर लिया था।

प्रतापी मुगल-सम्राट का विरोध करनेवाले छ.शिवाजी ने हिंदुओं की उन्नति के लिए क्या क्या कार्य किए इसका उल्लेख ` शिवा-बावनी ` के अनेक छंदों में कवि भूषण ने किया है --

` सो रँग है सिवराज बली जिन
नौरँग में रँग एक न राख्यो। (पद क्र.२५)
और पूरब पछाँह देश दच्छिन तें उत्तर लौ
जहाँ पातसाही तहाँ दावा सिवराज को।। ` (पद क्र.३३)

इन दो पदों में छ.शिवाजी महाराज के अधिकार क्षेत्र का और उनके बल या हिम्मत का वर्णन किया है। पद क्र.५० में ---

` राखी हिंदुवानी हिंदुवान को तिलक राख्यो। तथा पद क्र.५१ में
वेद राखे विदित पुरान राखे साराजुत। `

आदि पदों में उनके कार्यों का उल्लेख किया है।

छ.शिवाजी महाराज का जन्म ही महाराष्ट्र में होने के कारण उन्होंने अपने हिंदु राज्य की स्थापना महाराष्ट्र में ही की, फिर भी उनकी दृष्टि में संपूर्ण भारत वर्ष एक था । उनकी राष्ट्रीय भावना संकुचित नहीं थी, बल्कि व्यापक थी । उनके सामने संपूर्ण भारत की भलाई थी । उनकी चेतना, उनका कर्म, उनका आदर्श एवं उनके विचार सभी राष्ट्रीय स्तर के थे ।

महाराज शिवाजी के जमाने में जो स्वाभिमान,आत्मगौरव और धर्माभिमान था, वह छ. शिवाजी में था । उन्हें राष्ट्र के स्वाभिमान पर प्रहार सहन नहीं होता था । वे राष्ट्र की रक्षा के लिए पूर्ण समर्थ थे । उस समय के रीति के अनुसार छ.शिवाजी ने देश के कल्याण के लिए एक भारतीय शक्ति जो कुछ कर सकती थी, वह सब किया था । वे बड़े उत्साह से जो कार्य करते थे, वे सब कार्य राष्ट्र की सुरक्षा के लिए ही करते थे ।

छ.शिवाजी की राष्ट्रीय भावना का मूल्य आज भी पूर्ववत है,और वह मूल्य इससे आगे भी तब तक बचा रहेगा, जब तक छ.शिवाजी की स्वीकृति जनमानस में बनी रहेगी ।

" जब तक छ.शिवाजी का नाम इतिहास में अमर रहेगा और वह अपने चारित्रिक गुणों से जन-मन को आंदोलित करता रहेगा, तब तक उससे संबंधित काव्य-कृति का प्रभाव भी जन-मानस पर पूर्ववत् बना रहेगा ।"[४]

" यावत् चंद्र दिवाकरौ " के अनुसार जब तक आकाश में चाँद और तारे चमकते रहेंगे, सूरज,सुबह के समय उगता रहेगा, और प्रकाश देता रहेगा, तब तक इस पृथ्वी पर छ.शिवाजी का नाम एक राष्ट्रपुरुष, एक धर्मरक्षक,वीर और प्रजाहित दक्ष राजा के रूप में लिया जाएगा ।

निष्कर्ष --

छ.शिवाजी की राष्ट्रीय भावना संकुचित नहीं थी, बल्कि व्यापक थी। उनके सामने संपूर्ण भारत की भलाई थी। उनकी चेतना, उनका कर्म, उनका आदर्श एवं उनके विचार सभी राष्ट्रीय स्तर के थे। वे राष्ट्र की रक्षा के लिए पूर्ण समर्थ थे।

महाराज शिवाजी ने अपनी वीरता से दिल्ली की महान शक्ति का सामना किया था और उसमें उन्हें सफलता भी मिली। वे राष्ट्र के शत्रुओं को नष्ट करने के लिए खान-पान और आराम आदि भूलकर दिन रात लड रहे थे। उन्होंने आदिशाही, कुतुबशाही और औरंगजेबशाही से आजीवन संघर्ष जारी रखकर अपने राज्य का विस्तार किया था। उन्होंने मुगलों की बढती हुयी शक्ति का संगठित रूप में जबरदस्त विरोध करके उसे कुचल डाला था।

राष्ट्रनायक के लिए जो गुण आवश्यक होते हैं वे सब गुण छ.शिवाजी में थे। उदा. देशभक्त, राष्ट्र-प्रेमी, दूरदर्शी, योग्यता, तल्लीनता, धैर्य और निर्णय आदि सभी गुण छ.शिवाजी में थे। इन गुणों से ही उन्होंने मुगलों की विलासिता का लाभ उठाकर धीरे-धीरे संपूर्ण दक्षिण के राज्यों पर विजय प्राप्त की थी, और स्वतंत्र हिंदु राज्य की स्थापना की थी। इन गुणों के कारण ही छ.शिवाजी को भारत का प्रजाहितदक्ष राजा कहा जाता है।

संदर्भ सूची

संदर्भ क्र.	ग्रंथ का नाम	लेखक	पृष्ठ क्र.	प्रकाशक । प्रकाशन संस्करण
१	भूषण और उनका साहित्य	डॉ.राजमल बोरा	१६६	साहित्य रत्नालय,३७ । ५०, गिलिस बाजार,कानपुर । द्वि.सं. १९८७
२	भूषण(साहित्यिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन)	डॉ.भगवान दास तिवारी	२६०	साहित्य भवन(प्रा.)लि., इलाहाबाद -३,प्रथम सं., १४ जनवरी १९७२
३	शिवराज-भूषण	महाकवि भूषण	३४	किताबघर,मेनरोड, गांधीनगर,दिल्ली-११००३१, प्र.सं.नवंबर १९८२
४	भूषण और उनका साहित्य	डॉ.राजमल बोरा	२००	साहित्य रत्नालय, ३७ । ५० गिलीस बाजार, कानपुर,द्वि.सं.१९८७